

साहित्यिक और सामाजिक मूल्यों की मासिक पत्रिका

R.N.I. No. : RAJHIN/2018/75539

www.mahisandesh.com



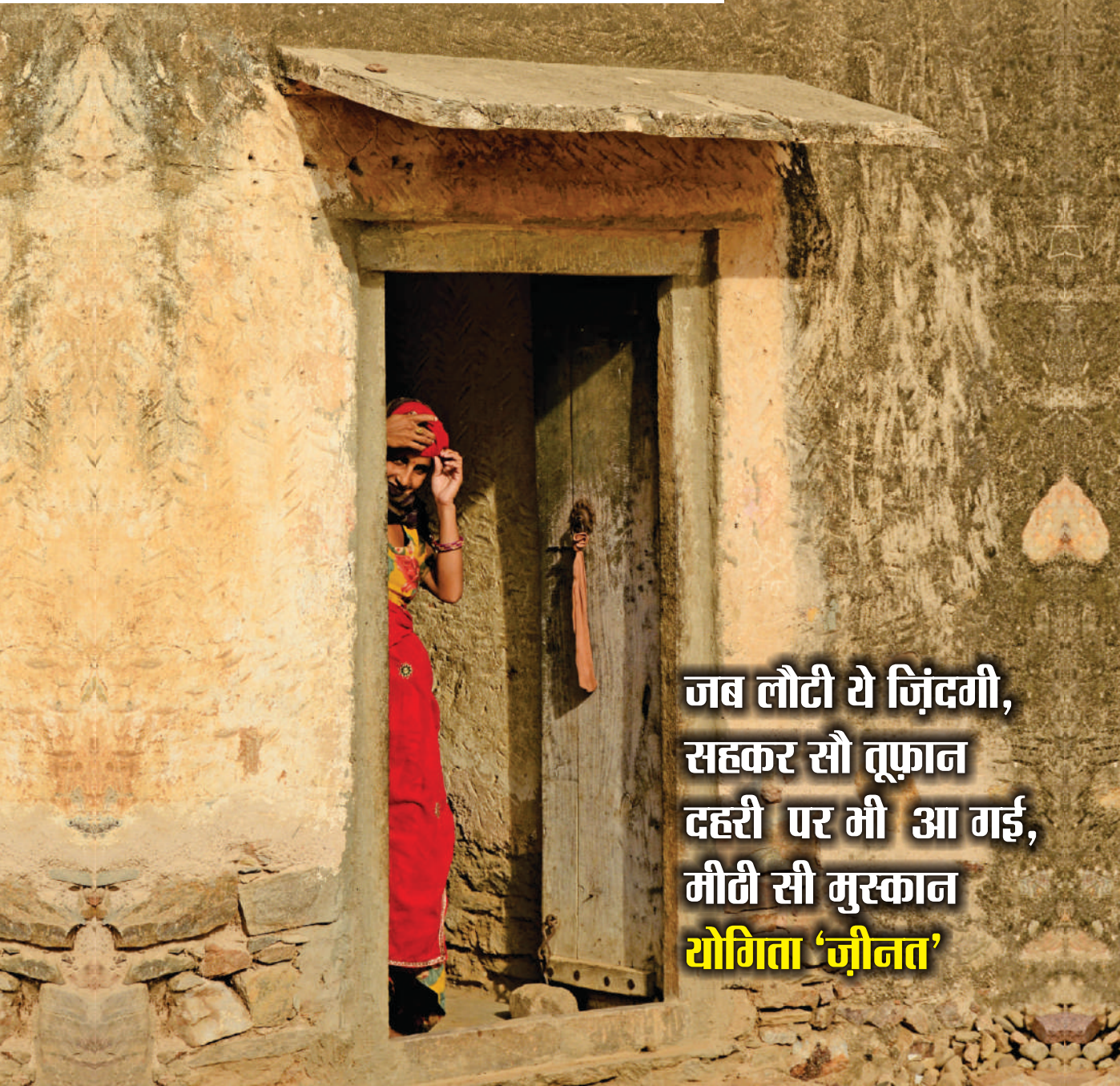
ISSN: 2581-9208

माही संदेश

दस्तक दिल तक

जिंदगी की
ओर लौटते
कदम...

वर्ष : 3 | अंक : 4 | जुलाई : 2020 | पृष्ठ संख्या : 32 | मूल्य : ₹ 35/-



जब लौटी ये जिंदगी,
सहकर सौ तूफान
दहरी पर भी आ गई,
मीठी सी मुस्कान
योगिता 'जीनत'

सकारात्मक सोच ही जीवन को बनाएगी सफल



सुधीर माथुर

संरक्षक-सलाहकार
माही संदेश

mathursudhmat@yahoo.com



वर्तमान समय मुश्किल जरूर है लेकिन इस दौरान हम एक दूसरे की सहायता करके आपस में मुस्कान बांटकर इस संकट की घड़ी को खुशनुमा बना सकते हैं। हम सकारात्मकता अपनाकर न केवल कोरोना बल्कि जीवन का हर संकट दूर कर सकते हैं।

आज प्रकृति फिर से निखर रही है, गंगा का पानी बिना किसी सहायता के स्वच्छ हो रहा है, दूरियाँ फिर से रिश्तों को करीब लेकर आई हैं, अब पता चल रहा है कि कौन कितना करीब है। सुबह से लेकर शाम तक पक्षियों के वही मधुर कलरव गूँज रहे हैं जो कभी बचपन के दिनों में हम सुना करते थे। अभी हाल ही जब बरसात ने दस्तक दी तो हमने मालार्पण में बारिश का अभिनंदन किया तब ऐसा लग रहा था कि मानो पेड़ का पत्ता-पत्ता अपनी खुशी का इजहार कर कह रहा हो, बूँदें भी कह रही हों कि ज़िंदगी ऐसी ही होती है। प्रकृति हमसे फिर से बतियाने लगी है, बेजुबान जानवर भी इस बदलाव को समझ रहे हैं,

मेरे दिल के बेहद करीब तीनों बच्चे पोली, लैला, लीजा भी हर पल को जी रहे हैं, वफादारी निभाने में सबसे आगे होते हैं ये जानवर।

इसी प्रकृति ने हमको यह दूसरी ज़िंदगी दी है संभलने के लिए कि अभी भी वक्त है, क्योंकि यह ऐसा दौर है जब कुछ भी काम

न आया और काम आई तो बस मानवता। हम दूसरों की कमियाँ भूल उनकी खूबियों को याद रखें, क्योंकि कमियाँ हर इंसान में होती हैं लेकिन इसके विपरीत खूबियाँ भी हर इंसान में भरपूर होती हैं। हम बस हर पल सकारात्मक सोचें क्योंकि वो कहावत तो आपने सुनी ही होगी कि हम जैसा सोचते हैं वैसा ही बनने लगते हैं। जब यह बात हमको पता ही है तो क्यों न हम अच्छा बनने की ओर ध्यान दें। ईश्वर को बाहर खोजने की बजाय खुद के अंदर खोजें और इस संकट की घड़ी में जरूरत मंद की सहायता करें।

मशहूर शायर बशीर बद्र जी का एक शेर है कि

सात संदूकों में भर कर
दफ़न कर दो नफरतें।

आज इंसानों को मोहब्बत की
जरूरत है बहुत।

आशा है कि हर बार की तरह माही संदेश का यह जुलाई अंक यकीनन आपको सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करेगा...इसलिए अच्छा पढ़ें, अच्छा सुनें और हमेशा अच्छा कहें...

सुधीर माथुर

माही संदेश

(राष्ट्रीय पत्रिका)

संस्थापक	स्व. डॉ. मदन लाल शर्मा* स्व. पद्मनारायन*
संरक्षक-सलाहकार	सुधीर माथुर*
प्रधान संपादक	रोहित कृष्ण नंदन (9887409303)
प्रबंध निदेशक	डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा*
प्रबंध संपादक	योगिता 'जीनत'*
सह-संपादक	नित्या शुक्ला* ममता पंडित* डॉ. महेश चंद*
आईटी सलाहकार	सोनू श्रीवास्तव*
संवाददाता	दीपक कृष्ण नंदन* ईशा चौधरी*
अकादमिक सलाहकार	डॉ. सुधीर सोनी*
बिजनेस हेड	अनुराग सोनी* राजपाल सिंह*
कानूनी सलाहकार	शिव कुमार अवार*
सर्कुलेशन मैनेजर	आर.के.शर्मा* (मुम्बई)

परामर्श समिति

माला रोहित कृष्ण नंदन*	डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर*
डॉ. गीता कौशिक*	राजकुमार शर्मा*
डॉ. रश्मि शर्मा*	बालकृष्ण शर्मा*
डॉ. नीति मिश्रा*	डॉ. मीना शर्मा*
चन्द्र प्रकाश गुप्ता*	प्रकाश चन्द शर्मा*

संरक्षक सदस्य रामेश्वरी देवी*

डिजाइनिंग Design n Print
(www.designnprint.in)

मुद्रण कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स
9024765603

पृष्ठ संख्या : 32 आवरण सहित
प्रकाशन तिथि : प्रत्येक माह की 01 तारीख
: कार्यालय :

50-51 ए, कनक विहार कमला नेहरू नगर के पास,
अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

ई-मेल :
editormahisandesh@gmail.com
मोबाइल : 9887409303

पत्रिका में प्रकाशित आलेख-रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं।
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा। चित्र व लेख के कुछ आंकड़ों को
इंटरनेट वेबसाइटों से संकलित किया गया है।
नाम के आगे अंकित (*) विद्व अतिथिक है।



जिनमें होती है लगन चुनते नहीं विकल्प।

रोहित कृष्ण नंदन

प्रधान संपादक
माही संदेश

mahisandesheditor@yahoo.com

जिस तरह हम आम के पौधे को इसी कामना के साथ सींचते हैं कि जब यह पौधे से वृक्ष का रूप लेगा तब आम रूपी फल से लाभान्वित करेगा, और हम इसी उद्देश्य की पूर्ति के हिसाब से इस पौधे की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं और फिर समय आने पर उस वृक्ष से फल की प्राप्ति करते हैं। ठीक उसी तरह यह समय जो अभी चल रहा है इसमें हमें इतने ही धैर्य की आवश्यकता है। सभी तरह के बुरे विचारों को अपने हृदय से दूर रखना है और ईश्वर से यही कामना करनी है कि हम सभी इन विपरीत परिस्थितियों से जंग में विजयी हों, जब हमारी इच्छाशक्ति मजबूत होगी तो कोई भी हालात हों हम उनसे अवश्य ही बाहर निकलकर मुस्कराएंगे। हो सकता है कि थोड़ा समय अवश्य लगे लेकिन यही तो हमारी परीक्षा का समय है कि हमें बिल्कुल भी अधीर नहीं होना है, विश्वास रखना है खुद पर और आगे बढ़ना है लड़ना है और जीतना है फिर देखना जीत हमारी होगी और फिर हम देखेंगे कि एक बेहतर भविष्य के लिए नया समाज एक नई सोच के साथ हमारा इंतजार कर रहा है। बस लगन और ईमानदारी के साथ हम अपना काम करते रहें यकीनन हर मुश्किल का हल स्वतः निकल जायेगा। मेरे आदरणीय कवि राजेश राज जी की ये पक्तियां मुझे बेहद पसंद हैं....

जिनमें होती है लगन

चुनते नहीं विकल्प।

पूरे होते हैं सदा

उनके सब संकल्प।।

शेष फिर...

शेष फिर...



हर एक दिन उदास दिन तमाम शब उदासियों
किसी से क्या बिछड़ गए कि जैसे कुछ बचा नहीं।।

इफ़ितख़ार इमाम सिद्दीकी

अभिनंदन

एक नजर यहां भी

उम्मीद विजयी पताका फिर लहराएगी... शारीरिक दर्द से ज्यादा, प्रशासन की लापरवाही, अनदेखी का दर्द प्रेरणा	अनीता मालवीय	5
मुश्किलों को हराती "शशि" मेरा गौरव -डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर व्यंग्य प्रत्यंवा	सुनील प्रसाद शर्मा	5
विधायकों की बाड़बन्दी अनमोल रिश्ता बिटिया के नाम पत्र... महामारी कुछ सिखाती है मित्र संदेश	डॉ. गायत्री देवी जे लालवानी	6
कोरोना को कैसे हरायें हमारा कानून स्टार्टअप इंडिया स्कीम कथा संदेश	दीपक आजाद	9
फोबिया धर्मात्मा सहेत संदेश	सुरेश चन्द्र	10
रीनल स्टोन्स में होमियोपैथी कारगर आओ मुस्कराएँ कोरोनाजी तुम मत जाना हमारा समाज	कुंज कुमार राठी	12
मूल खासी (मेघालय) मातृवन्शात्मक समाज में नारी कोरोना योद्धा जन संदेश	शिवकुमार अवार, फौजदार	13
मास्क की रोचक मनोरंजन बातें काव्य कलम मन की बात	नम्रता शील	14
बैंककर्मी की जुबानी जिंदगी की कहानी... यथार्थ	डॉ. अखिलेश शर्मा	14
ईश्वर जीवन का अंतिम सत्य व अंतिम लक्ष्य हमारी दुनिया उम्मीद बंधाते रहिये... सिनेमा संदेश	डॉ. मुकेश गुप्ता	15
ये रातें नयी पुरानी - रीता भादुड़ी सलाम	महेन्द्र कुमार वर्मा	18
बेजुबान जानवरों के लिए भगवान से कम नहीं वीरेन शर्मा	डॉ. अनिता पंडा	19
		21
	अशोक वाघवाणी	22
		23-24
	प्रिया राठी	25
	अजय शर्मा	26
	ममता पंडित	27
	शिशिर कृष्ण शर्मा	28
	रोहित कृष्ण नंदन	30

माही संदेश

हिन्दी पत्रिका के सदस्य बनें

: कार्यालय :

माही संदेश , 50-51ए, कनक विहार
कमला नेहरू नगर के पास, अजमेर रोड,
हीरापुरा, जयपुर (राजस्थान)।

सदस्यता शुल्क :

दो वर्ष : ₹ 800
पंचवर्षीय : ₹ 2,000
आजीवन : ₹ 11,000

चेक MAHI SANDESH (माही संदेश)
के नाम से देय एवं रेखांकित होना चाहिए।
रजिस्टर्ड डाक से प्रति मंगवाने पर प्रति
वर्ष 300/- अतिरिक्त देय डाक खर्च
शुल्क भेजें।

भवदीय

'रोहित कृष्ण नंदन'

संपादक : माही संदेश

खाता संख्या : 37802854186

IFSC : SBIN0032385

भारतीय स्टेट बैंक

शाखा : कनक विहार, हीरापुरा,

अजमेर रोड, जयपुर

paytm 9887409303

लिखते हैं तो स्वागत है...

अगर आप कविता, लघु कथा या
सामाजिक विषयों पर लिखते हैं तो
आप अपनी लेखन सामग्री हमें अपनी
तस्वीर व पते के साथ ईमेल या डाक
के माध्यम से भेज सकते हैं। चुनी हुई
रचनाओं को माही संदेश के आगामी
अंकों में प्रकाशित किया जाएगा।

डाक का पता - संपादक, माही संदेश

50-51 ए, कनक विहार, एसबीआई
बैंक के पास, हीरापुरा, अजमेर रोड,
जयपुर पिन-302021 राजस्थान

ईमेल-

editormahisandesh@gmail.com

Mob. & whatsapp 9887409303

आवृण चित्र अजय पानिव*

अजय पाखिख स्वतंत्र छायाकार है जिनकी तस्वीरें पिछले 25 वर्षों में कई
अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी है। इनकी विशेषता
ट्राइबल कल्लर, लोककला और भारत की लुप्त होती हुई विभिन्न कलाओं को कैद
करना है। फोटोग्राफी के अलावा अजय बागवानी व लेखन में रुचि रखते हैं।



विजय पताका फिर लहराएगी..



अनीता मालवीय

आमली बेरा, कृषि विश्वविद्यालय के पास, मंडोर जोधपुर, राजस्थान

इस कोरोना महामारी और लॉकडाउन की कुछ ऐसी बातें और यादें हैं जिनका जिक्र यहाँ करना चाहती हूँ। इस महामारी का दश सदियों तक जेहन में रहेगा। जहाँ इस लॉकडाउन से कई फायदे हुए, सरकार को कोरोना महामारी को काफी हद तक रोकने में मदद मिली, वहीं मेरे जैसे प्रत्येक व्यक्ति को कुछ समस्याओं से रूबरू होना पड़ा। मैं एक शोधार्थी हूँ और स्वामी विवेकानन्द स्टूडेंट्स वेलफेयर चैरिटेबल ट्रस्ट की सहायता से पढ़ रही हूँ। लॉकडाउन के दौरान मैंने देखा कि इंसान तो घरों में कैद थे लेकिन जानवर स्वतंत्र होते हुए भी भूख से त्रस्त, विलाप करते हुए नजर आए। तालाब, पोखर खत्म होने से, वे इधर उधर बिलबिलाए नजर आए। भूख प्यास से इधर उधर-धूमते दिखे, जिनको देखकर दया आती थी।

इसी बीच मैंने पाया कि सामान्य आवश्यकताओं के साथ-साथ आर्थिक विपन्नता से भी त्रस्त होना पड़ा क्योंकि सभी लोग उस दौरान बेरोजगार थे। कुछ परिवार वर्क फ्रॉम होम के सूत्र पर कार्यरत होकर जीवनयापन कर रहे थे। इस लॉकडाउन से उन पर संकट के बादल छा गए। इस गहन संकट के भंवर में मानव आज भय से भयभीत हो रहा है। लोगों की जिजीविषा जिसके कारण कुछ लोगों के द्वारा उल्लंघन किया गया लेकिन इसके पीछे उनकी भी विवशता रही होगी। किसान जो अन्न

का उत्पादक है, अपनी फसल का सही दाम नहीं मिलने से बेजार है। उसकी फसल का सही दाम नहीं मिलने से उनकी स्थिति दयनीय हो गई है। उनकी यह हालत देखकर मन जार-जार रोता था। इतने अनाज के होते हुए भी समय के चक्रव्यूह में दाने-दाने को तरसते मनुष्यों को देखा।



शिक्षा के क्षेत्र में विचार करें तो विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के लिए यह समय चुनौतीपूर्ण रहा है। ऑनलाइन कक्षाएं चलाना किसी चुनौती से कम नहीं है। वहीं इसके सकारात्मक पहलू के साथ नकारात्मक पहलू सामने आए जिसमें विद्यार्थियों के मोबाइल प्रयोग की स्वतंत्रता से पब जैसे खेल, टिक-टोक के घातक परिणाम भी सामने आए, जिससे समय की बर्बादी होती नजर आई।

इस लॉकडाउन से देश को आर्थिक क्षति के साथ-साथ सांस्कृतिक क्षति का भी सामना करना पड़ा। मैं जिस ट्रस्ट से पढ़ रही हूँ, वहाँ संस्कारों की कक्षाएँ भी चलाई जाती हैं, जिसमें हमें सिखाया जाता है कि कैसे सकारात्मक

सोच के साथ समाज में सकारात्मक पहचान बनाई जाए और कैसे एक अच्छा इंसान बना जाए। लॉकडाउन के चलते मैं ये कक्षाएँ नहीं ले पाई और इससे लाभान्वित होने वाले बहुतायत बच्चे वंचित रहे। लेकिन मैंने इस लॉकडाउन में आत्म अध्ययन में बढ़ोत्तरी कर स्वयं की सुरक्षा के साथ समय का सदुपयोग भी किया। जहाँ ऑनलाइन पुस्तकें खरीदना बंद होने से मैं अन्य पुस्तकों को नहीं पढ़ पाई क्योंकि अधिक से अधिक पुस्तकें जो बाजार में उपलब्ध नहीं हैं, वे ऑनलाइन उपलब्ध हो जाती हैं, पुस्तकालयों में मिल जाती हैं। मैं इस लाभ से वंचित हो गई थी।

इस लॉकडाउन के दौरान देश के विकास और लोगों में जागरूकता पर विचार किया तो मैंने पाया कि कोरोना से मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है जिसका कारण अशिक्षा, लापरवाही के साथ-साथ व्यक्तियों की समझ में कमी भी है। इस महामारी से मन उद्वेलित होता था। इससे प्रभावित होकर मैंने भी देश के कोरोना वारियर्स और डॉक्टरों के मन में साहस पैदा करने के लिए कविताएँ लिखीं- "लॉकडाउन, देश को बचाओ, कल विजय पताका लहराएगी।"

इस कोरोना महामारी ने पूरा विश्व तहस नहस कर दिया है। मजदूर अपने घरों को वापस लौटे जो अपने साथ बीमारी लेकर आए, जिससे उन्हें कई समस्याओं से रूबरू होना पड़ा। देश में पहले भी बीमारी, दिक्कतें आती रही हैं, हम हर बार जीतकर निकले हैं। मुझे इस बार भी विश्वास है कि हम इस महामारी में अपनी जीत अवश्य दर्ज कराएंगे।

» सजग प्रहरी

शारीरिक दर्द से ज्यादा, प्रशासन की लापरवाही, अनदेखी का दर्द

साथियों,

रोज की तरह 29 जून सुबह 5:00 बजे उठकर वर्कआउट करने के लिए निकल गया। आज लंबी दौड़ का इरादा था, इसलिए सुबह 5:00 बजे ही 20 किलोमीटर की road running के लिए अपने घर से निकल गया, पर छोटे किलोमीटर पर ही मुश्किलों से मेरा सामना हुआ। मानसरोवर मेट्रो स्टेशन के पास न्यू सांगानेर रोड 200 फीट चौड़ी सड़क पर 4-5 इंच लोहे की रॉड निकली हुई थी, जिसने अपने होने का अहसास मेरे पैरों को जोरदार ठोकर के रूप में दिया। मैं सड़क पर गिर पड़ा। आपको मैं वह तस्वीर भी दिखाना चाहता हूँ कि किस तरीके से रोड़ पर इतनी बड़ी लोहे की रॉड निकली पड़ी है। गिरने से मेरे हाथ और पैर में मामूली चोटें आईं, कुछ ज्यादा नहीं। दोस्तों, मुझे ताज्जुब होता है कि पीडब्ल्यूडी के अधिकारी ऐसी लापरवाही क्यों करते हैं? यहाँ बड़ी दुर्घटना भी हो सकती है, किसी मोटरसाइकिल, किसी साइकिल या अन्य वाहन चालक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अन्य पैदल राहगीर दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। किसी की जान भी जा सकती है, परंतु जिनके पास इसको देखने की जिम्मेदारी है, वह आंख मूंद कर बैठे हैं। खैर, मेरा हौसला इससे टूटने वाला नहीं था। मैंने 20 km की दौड़ पूरी की और उसके बाद घर आया तो दौड़ पूरी करने का सूकून तो था ही, परंतु साथ ही दर्द का अहसास भी था। शारीरिक दर्द से ज्यादा प्रशासन की लापरवाही, अनदेखी का दर्द। भले संबंधित विभाग न सुधरे, कुम्भकर्णी नौद सोता रहे, पर मैं कल से और सतर्क रहूँगा, आप भी सतर्क रहें, स्वस्थ और आनंदित रहें।

इन्हीं कामनाओं के साथ आपका सजग प्रहरी...सुनील प्रसाद शर्मा



> सुनील प्रसाद शर्मा





माही संदेश/ डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर जी की धर्मपत्नी का स्वास्थ्य अधिक खराब होने के कारण जब मैंने उनकी तबीयत के बारे में उनसे जानकारी ली तो उनका कहना था कि मेरी पत्नी मेरा गौरव है। उन्होंने अपनी पत्नी की आपबीती सुनाई जो इस लेख के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

भटनागर जी कहते हैं कि जब मैं अपनी पत्नी के बारे में सोचता हूँ तब मेरे मन में ऐसा मकान सामने आता है जिस पर मूसलाधार बारिश गिर रही है। बिजली कड़क रही है। कड़क-कड़ककर कभी किसी हिस्से में कभी किसी हिस्से में गिर रही है और उस मकान की मालकिन बारिश से बचाने के लिए मकान की सभी चीजों को इधर से उधर से रख रही है। कभी किसी चीज से उसको ढक देती है लेकिन इन सब प्रयत्नों से भी घटादार अंधकार मिटता नज़र नहीं आता। उसे माँ छह माह का छोड़कर चल बसी थी, तब उसका भाई ढाई वर्ष का था। पहली माँ का स्वर्गवास तत्काल हो चुका था फिर उनकी छोटी बहिन से शादी हुई जिनके यह दोनों भाई-बहन थे। उनके पिताजी ने तीसरी शादी कर ली थी जिससे पांच बच्चे हुए, अब ये भाई-बहिन घर में उपेक्षित हो गए। चाचा-चाची ने इन्हें पाला। शशि मेरी पत्नी के सिर पर सौतेली मां ने काम का सारा बोझ डाल दिया। उसका पढ़ना लिखना बंद, रात भर उससे काम ही कराया जाता।

उस छोटी बच्ची के मनो-मस्तिष्क पर क्या बीती होगी? जब उसने तीसरी मां से हुए भाई-बहनों को सुविधा और आराम से जीते देखा होगा और खुद को नौकरानी के रूप में परखा होगा? रात-रात भर खून के आँसू पिए होंगे, बेचैनी ने मन मरोड़ दिया होगा, उसके आँसू पौछने वाला तो दूर रहा, देखने वाला भी



मुश्किलों को हराती 'शशि' मेरा गौरव - डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर

कोई नहीं था। घर में रहकर वो लावारिस महसूस करती थी, जिस किसी रिश्तेदार को अपने घर के काम की आवश्यकता होती, वह उसे ले जाता था। कौन था उसके पास ऐसा जो उसे दिलासा दिला सकता था।

वह तो मेरी बुआ थी जिसने उसके दुःखों को गहराई से महसूस किया था और मेरे सामने प्रस्ताव रखा था कि मैं उसको अपना लूँ। यही हुआ, मैं शादी करके उसे आगरा ले आया। दुःख की कहानी का अभी अंत नहीं हुआ। क्या खाना-पीना मिला? क्या ओढ़ना-पहनना हुआ? किसने प्यार से उसकी ओर देखा, उसको ढाढस बंधाया? आगरे में मैंने उसे डॉ. पुष्पा के क्लिनिक में ले जाकर उसका चेकअप कराया तब डॉ. पुष्पा ने बताया कि कुछ गंभीर रोग है, उस ओर किसी का ध्यान नहीं गया, बच्ची क्या समझती? और मेरी पत्नी का इलाज मैंने शुरू करवा दिया। लगभग एक वर्ष बीत गया, बहुत कुछ ठीक हुआ परन्तु मानसिक पीड़ाएँ दवाओं से ठीक नहीं

होती। हमारे घर में भी हमारी मां ने उसकी उपेक्षा इसलिए की क्योंकि वह अपने घर से कुछ लेकर नहीं आई सिवाय बीमारियों के, इस बीच मेरी मां ने मेरा दूसरा विवाह शिकोहाबाद के एक अच्छे घराने में तय करना चाहा, तो मैं बिखर गया, इनकार कर दिया, धीरे-धीरे समय बीता, मेरी पत्नी ने ना केवल पांच बच्चों को जन्म दिया बल्कि उनकी परवरिश आर्थिक कठिनाइयों से घिरे रहकर भी इस साहस, विश्वास और कर्मठता के साथ की कि बच्चों को कोई कमी न आ सके। भरपूर प्रेम दिया, बाजार से नमूने के टुकड़े खरीदकर रात भर उसने बच्चों के कपड़े सिले। खुद खाया-पीया कम, जो बच जाए वही ठीक था। मुझे और बच्चों को खाने-पीने की कोई कमी नहीं आने दी।

बच्चों के दुःख दर्द को दूर करने में रात दिन लगी रही अपना सुख चैन छोड़कर परिवार के सुख-चैन पर ही पूरा ध्यान दिया।

घर का खर्च चलाने में उस जैसा सुलझा हुआ

शुयद ही कुई मिले। दल-सबुजी कुे कभी बक कुती थी उसे धुकर उससे सुबहरुे पुराटे बनकर बकुवुं कुे खिलकुती। यहुँ तक कुि सुखी रोटियुं कुे तलकर सुबहरुे कल नलशतल तैयलर कर देती। मुझे लगतल है कुि वहरुे अपने अभलवुं कुे यलद करती हुई प्रत्येक कुिजुुेदलरी कुे दिल से निभलती रहरुे।

दूसरी ओर बीडलरी उसकल पंड नहुीं कुे डुडुती। एक डलर डुडुकर ने उसे टी.बी बतल दी। उसके बरुतन वगैरहरुे अलग रखे गए, तभी दिल्ली कुलनल हुलल, हडदरुद देवलखलने डें गए वहुं बड़े हकीड सलहरुे ने कहरुे कुि टी.बी- बी-बी कुलकु नहुीं है, 'आपकी पतुनी गरुभवती है', और इललकु से वहरुे ठीक हुेने लगी। अब हड बीकलनेर आ कुेके थे, बीकलनेर के पुरलने डकलन के दरवलजे बहुत डुटे डलरी थे, डैं तब घर से डलहरुे थल, 31 डलरुु तक सलरे डिल डलस करवलकर डैंक से पैसल उतलनल हुेतल थल, तभी मुझे सुकुनल डिली कुि डेरी पतुनी डेहुेश हुे गई है, ततुकल कुले आओ, ललरखुं रुपए कल डलडल थल, कुलकु सुझ नहरुे रहरुे थल, डैं अपने वलडलल कुे उकुव अडलकरलरलरुं से नलरलश हुेकर कलेकुटर के डलस डहुँकुल। कलेकुटर ने सलनलनुडुतल दरुशलते हुए डैंक कुे उस रलश कल डुरलडुत बनलने के आदेश दे डलए। डैं सुबहरुे कुलर बजे के करीब घर डहुँकुल। दुे बकुवे सुेए हुए थे और दुे कुलल गहरुे थे। उनकी आंरुखुं डें आँसु सुख गए थे। डुलकु तल डललुड डुडल कुि रसुई कल कुंगी दरवलकुल खलनल बनलते हुए उनके सलर डलर गलर डुडल थल और अब वहरुे कुिसी कुे डहरुे कुलनती नहुीं है और मुझसे कहरुे कुि आड डलत करके देखुे।

डैंने शलश से डलत की डलर उससे कुई ललड नहुीं हुलल कुुं कुे उनहुेने मुझे भी नहुीं डहरुे कुलनल। उनकुे लेकर डैं सीधे दिल्ली डहुँकुल, हडदरुद देवलखलने डें गलल कुहुँ एलुेडुथी कल डुडुकर भी डैठतल थल, बड़े

हकीड सलहरुे के डरीकुं के नंबर डंत कुेके थे, डैं अंत तक डैठल रहरुे, बड़े हकीड सलहरुे कुल उठ रहरुे थे तल उनहुेने मुझे देखकर डुलकु कुि यहरुे सलहरुे कुुं डैठे हुए हैं। इनकुे अंदर डुलल लुे, हड अंदर गए आधे-एक घंटे तक हकीड कुी ने डेरी पतुनी कल कुैकअड कललल और डुले कुि डलडलल डें कुेड आई है, कुेड गहरुे है, सडड लगेगल डलर ठीक हुे कुलएगी, इसके ललए



धैरुं की आवशुडकतल है। अकुलुी तरह सुेक लुे, तब डेरे सलथ डेरे कुलकुलुी थे कुे यहरुे सब डलहरुे खड़े सुन रहरुे थे, मुझे कुड डलकर वहरुे अंदर आए और डुले- हडें आड डलर डुलर वलशुवलस है, आड इललकु शुरु करुं। डैंने तल डलकुलुे कुललीस वरुुं डें डेरेल और पतुनी कल इललकु कुल भी कुरुरुत हुई वहुीं ही करवललल और डुली तरह ठीक भी हुलल। बड़े सलहरुे ने देवल ललख दी कुिसडें कई कलड़े भी थे, कुलनकुे आधल कुललुे डलनी डें तब तक उडललनल थल कुल तक सुुी डुरलड नहरुे कुलए। डेरे कुलकुलुी मुझसे डुले तुड नुीकरी डलर कुलओ यहरुे कलड तुे हलरी कुलकुी और डैं करतल रहुंगल। यहरुे ऐसुी सुथलतल थी कुल शलश कुलते कुेडले कुे अपने हलथ डें ले सकती थी, डरुड तवे डलर हलथ रख सकती थी। उडली हुई सबुकी कुे डैंक सकती थी। बकुवुं कुे नहुीं डहरुे कुलनती

थी। तलन सलल डें कुलकर वहरुे इलस वुवलधल से डुकुत हुई।

डैं ठहरुे कुेडल-डुेडल लेखक। डलन डें नुीकरी और रलत कुे दस बजे के डलद सुबहरुे कुलर बजे तक ललखनल डलर सुे कुलनल। ललखते हुए मुझे डुलकु लगतल थी, डेरी डुलकु कल इललकु डेरी पतुनी कुलनती थी। वहरुे हलवल बनकर ललती और डेरे सलडने रख देती और डेरेल लेखन कल कलड खतुड करने कल इंतकुलर करती। उस हलवे की तलकत थी न केवल डैं ललखतल रहरुे डलकु-डड़े-डड़े देश-वलदेश के डुरकलशकुं ने उसे सस डलन डुरकलशलत कललल। उससे कुे डैसल आडल, उसकल अडलकलंश डलल कल डुरेडड डैंने नए ऐतलहलसलक लेखन के ललए उन सुथलनुं डलर खरुव कर डललल कुलससे उनकल संबुंध थल। वहुीं डहीनुं रहरुे न डुडतल, हुेतल कल कलरललल तलन-कुलर सुुी रहरुे। लेकलन उसडें डहलनुं रहरुे न डुडतल तले डलवकत हुेतल ऐसे डें डेरी पतुनी धरुडशललल दूड लेती कुे हुेतल से भी अडलक सुवलधलकुनक हुेतल।

एक डलर कुल कलकतल से लुीटे तल डललुड हुलल कुि कुलकुी कल देहुंत हुे गलल है। कुलकुलुी अकेले थे, तल मुझे डेरे डलरललर दिल्ली उनके यहुँ कुेडुनल डुडल, डैं हर शनलवलर कुे ललडडल हकुलर कललुेडलर से दिल्ली आतल और उसी रलत अपने डुकलड के ललए नलकल आतल। इसी डुीक डीडलवली के ततुकल डलद कुलकुलुी भी नहुीं रहरुे। मुझे यहरुे सुकुनल दस डलन तक डुरलड नहुीं हुई। कुल दिल्ली डहुँकुल तले डलल कुि नलते-रलशुतेदलरुं ने सलरल घर, कुलकु की दुकलन उधेडु दी थी और धन दुीलत लूटकर कुल कुेके थे। डैंने शलश से डुलकु- वहरुे रुेने लगी, उसे कुलकु सडड डें नहुीं आ रहरुे थल। उसे डुडल आघलत लगतल कुि उसकुे हदुडलघलत ने कुकडु लललल।

अब डैं और डेरी पतुनी हुरुसुडलतल डें एक कडलर लेकर रहरुे रहरुे थे। घर डकुवुं डें ने

संभाला। छोटी बेटी और बेटा भीड़ भरे चौराहे को पारकर कंधे पर बस्ता लटकाए स्कूल से सीधे हॉस्पिटल में मिलने आते तब वहां उस चौराहे पर रोज एकसीडेंट हुआ करते थे। दोनों पब्लिक स्कूल में थे। ढाई वर्ष तक इलाज होता रहा। फिर मैं परिवार को लेकर उदयपुर आ गया। वहाँ से बॉम्बे हॉस्पिटल आया। डॉक्टर सक्सेना ने ऑपरेशन किया। एक महीने बाद लौटा, ब'चे मेरे साले राजेन्द्रकुमार भटनागर के पास जयपुर रहे।

मैं रिटायर्ड भी हो गया लेकिन मेरी पत्नी बीमारी के चक्रव्यूह से बाहर नहीं आ सकी। दूसरी बार ए स दिल्ली में उनके हृदय का ऑपरेशन हुआ। तभी पता चला इनको ब्रेन ट्यूमर है एक दिमाग के नीचे और एक माथे के पास। डॉ मेहता ने साफ मना कर दिया, बचने का कोई चांस नहीं है। लेकिन मैंने हिमत नहीं हारी। डॉ. एस.एन.भगवती ऐसे अकेले डॉक्टर निकले जिन्होंने बाँ बे हॉस्पिटल के मैनेजर गोकुल प्रसाद से कहा- इनको तत्काल बुला लो और दूसरे दिन पहुंचने पर शशि को ऑपरेशन थिएटर में सुबह आठ बजे ले गए रात के बारह बजे चुके थे। मैं मैनेजर के कमरे में बैठा था, उनके कमरे में श्रीनाथजी की मूर्ति थी, वो उसी का ध्यान लगाकर मुझे आशवासन दे रहे थे और बार-बार स्थिति जानने के लिए फोन कर रहे थे। उनको सूचना मिली ऑपरेशन हो गया, उनको डबल आईसीयू में शिफ्ट कर दिया गया है। बाहर से देख सकते हो। तीसरे दिन फिर दिमाग का ऑपरेशन हुआ। मैं फार्म पर हस्ताक्षर करके हॉस्पिटल के प्रवेश द्वार पर लगी हनुमान जी की मूर्ति के पास बैठ प्रार्थना करने लगा। तब मेरा दामाद और बेटी भी वहां थे। मेरा बड़ा बेटा नवनीत तो दिल्ली से ही मेरे साथ आया था। वह ऑपरेशन भी सफल

हुआ। शशि की हड्डियाँ निकाल ली गई थी और बाद में यथा स्थान लगाने की बात की थी, इसलिए मुझे वहीं हॉस्पिटल में छह माह रहना पड़ा, फिर उदयपुर आ गए।

कुछ समय बाद फिर स्वास्थ्य बिगड़ा। पत्नी को महाराणा भोपाल हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। दो महीने वहाँ रहे पर ठीक नहीं हुई। तब मैं पुनः बॉम्बे हॉस्पिटल पहुँचा। वहाँ शशि भटनागर नाम की दूसरी महिला



ऑपरेशन होना था लेकिन गलती से उन्होंने हमें फोन कर दिया था। क्योंकि दोनों का नाम एक ही था, बस पति का नाम अलग था। हम वहाँ पहुंच चुके थे। शशि को ऑपरेशन थिएटर में ले जाने हेतु तैयार किया गया। लेकिन जब फॉर्म देखा तो उन्हें पता चला कि यह तो शशि दूसरी हैं। आज ऑपरेशन तो अन्य का होना था। डॉक्टरों ने कहा कि अब क्या किया जाए। तभी मेरी पत्नी बोली 'करना क्या है ऑपरेशन करो' और ऑपरेशन के लिए उसे अंदर ले जाया गया वहाँ दामाद राजीव व मेरी बेटी नीलम थे। एंडोस्कोपी हुई

उसके इलाज से लाभ हुआ। बीस दिन बाद लौट आए। आखिरी बीमारी जो अभी तक व्याप्त है, शशि की तबीयत बिगड़ी पैसिफिक उदयपुर ले गए जहाँ उन्हें आईसीयू में रखा गया। वहां से डिस्चार्ज होकर जैसे ही घर आए। घर में ऑक्सीजन आदि का प्रबंध पहले ही कर दिया गया था। उसी दिन रात को खून की उल्टियाँ शुरू हो गईं। सुबह फिर हॉस्पिटल आकर एंडोस्कोपी करवाई, उनका इलाज आज तक चल रहा है। अभी तीन दिन से उनको खून की उल्टियाँ हो रही हैं, अल्सर है। डॉ. पंकज गुप्ता का इलाज चल रहा है और जो तस्वीर आप देख रहे हैं, उसी पर रात-दिन बैठी-लेटी रहती हैं। गजब का साहस है, संकल्प है कि इतनी भयानक परेशानियों में भी वह हिमत नहीं हारी है। जबकि हमारा बड़ा बेटा और बहू घर छोड़कर चले गए हैं। इस बात को छह माह बीत गए। क्या बीत रही होगी उसके मन पर? इसका अनुमान कौन लगा सकता है सिवाय मेरे।

मेरे समस्त लेखन में उनका योगदान नहीं होता तो मैं क्या लिख पाता। मैंने उनके साथ होटलों, धर्मशालाओं में रहकर अनेक उपन्यास लिख दिए। उनकी यादें मेरे साहित्य में फूल की सुगंध की तरह बसी हुई हैं। मैं आज उनके सहयोग से गौरवान्वित हूँ। वह महान है क्योंकि वह करुणा की देवी है। सहृदय है, सत्यवादी है, कर्मठ है और साहसी है, मेरी पत्नी मेरा गौरव है। विषम से विषम परिस्थितियों में भी वह टूटी नहीं बल्कि मेरे टूटे हृदय को साहस प्रदान किया है।



डॉ. गायत्री देवी जे. लालवानी

असिस्टेंट प्रोफेसर
श्री कृष्ण प्रणामी आर्ट्स कॉलेज
दाहोद, गुजरात
मो. 7984498390

विधायकों की बाइबंदी



दीपक आज़ाद

जयपुर, राजस्थान

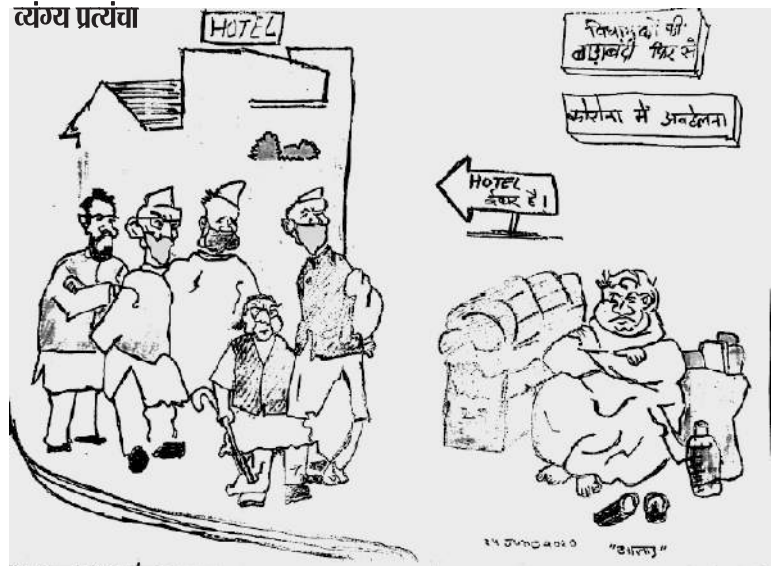
aazad.deepak@gmail.com

सुबह से ही शहर भर के पत्रकारों के बीच सुरसुराहट होने लगी थी। जिसका ओर-छोर देर रात तक हाथ न लगा। जाने क्या भूल हो गई थी पत्रकारों से। हर एक पत्रकार का 'सूत्र' खबर के सूत्र के बजाए अपने होने का सूत्र ढूँढने में लगा था। कहीं दूर दराज में किसी राजनीतिक दल के सहमे विधायकों को प्रदेश की सरकार संरक्षण देना चाह रही थी। मगर ये निगोड़े पत्रकार, उसकी टांग में टांग अड़ाना चाहते थे। सहमे विधायकों की परेशानी केंद्र सरकार भी हो सकती थी। या फिर खुद पार्टी की सहमति से सहमा-सहमी की रासलीला ये विधायक रच रहे हों। जो भी हो, खबर फैली हुई थी। जो पत्रकारों को अपने 'सूत्रों' को बीस सूत्री खर्राटों से उबारने को मजबूर कर रही थी। सुबह से दर्जनों बार दूर दराज स्थित फलाने राज्य के नेताओं के स्टेटमेंट जारी हो रहे थे। इसे ऐसे भी कह सकते हैं कि छुपमछुपाई की ललकार दी जा रही हो। विरोधी पार्टी को अगर विधायकों की दरकार है, तो वो आए और आकर थप्पा मार दे। जिससे वो सारे छुपे हुए विधायक उनके पाले में शामिल हो जाएंगे। बहरहाल, विधायकों की कोई खबर नहीं, जिस कारण से मातहत पत्रकारों की खबर ली जा रही थी। देर रात खबर फूटी, फलाने विधायक शहर से बाहर किसी पूर्वी छोर में बने महलनुमा होटल में बिखरे गए। बिखरे गए इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि कुछ अब भी उस राज्य में थे, जहाँ से वे सब उठाए गए थे। विरोधी दल चाहता है कि ये सारे विधायक उसको समर्थन करें। दूसरा दल चाहता है कि वे जिसमें अभी शामिल हैं, उसी में बने रहें। हालाँकि, दोनों दल अपनी दाल गलाने के लिए राजनीति को दलदल बनाने पे तुले हुए हैं। क्योंकि दोनों ही दल अच्छी खासी लक्ष्मी लुटाने को तैयार हैं। फिलहाल जिसका समर्थन ये विधायक कर

रहे हैं, उस दल ने अच्छा पैसा बहाया है। उसी का परिणाम निकला है जो ये फलाने विधायक उनके समर्थन में खड़े हैं। वहीं दूसरी मगर महत्वपूर्ण बात यह है कि जिस दल ने इन्हें उस दूर दराज स्थित फलाने राज्य से लेकर यहां आए हैं। उसका दर्द भी तारीफ के काबिल है। क्योंकि विरोधी पार्टी की नजर से इन विधायकों को बचाना भी जरूरी था। राज्य में हुए आम चुनाव के बाद ये विधायक आम जन की संपत्ति बन गए थे। और इस तरह से दलगत चुनाव के बाद अब उस तथाकथित पार्टी की निजी संपत्ति बन गए हैं। और अब उस पार्टी का कर्तव्य है कि वह इन्हें उन लुटेरी विपक्षी पार्टी की बुरी नजर से दूर रखें। जो कि कभी की इन पर डोरे डाल रही है। अगर भूल से भी ये विधायक उन विरोधियों के बनाये जाल में आ गए तो लक्ष्मी आंखें फेर लेगी। ऐसा मानना है इस पार्टी का। वैसे विपक्षी दल भी पूरी कोशिशों में जुटा हुआ है। वह इन बिके हुए शायद मजबूरन, पर बिके हुए विधायकों की कोशिकाओं को एक बार फिर जागृत करना चाहता है। जिससे वह इन को एक बार फिर से अच्छे दामों में खरीद सके। विरोधी पार्टी इन विधायकों को आमजन के भले के लिए ही खरीदना चाहती

है। वह जानती है कि आमजन दूसरी पार्टी के पक्ष में नहीं है। तभी तो उन्हें कम सीटें मिली हैं। बड़ी पार्टी बनने का खिताब इस विरोधी पार्टी को मिला है। जो भी हो, लक्ष्मीपति बनना है तो जी तोड़ मेहनत करनी पड़ेगी। खैर पत्रकारों को तो देर-सवेर सारी सच्चाई पता चल ही जाएगी। कौन सा विधायक कितने में बिका है। या किसे कितनी प्रॉपर्टी या किस विधायक को सीबीआई या ईडी की धौंस से काम चलाया गया है। परंतु देश की जनता को पता नहीं चल पाएगा यह कि फलाना शिक्षा मंत्री इतने करोड़ में खरीदा गया है ताकि देश-प्रदेश की शिक्षा नीति में सुधार किया जा सके। या फलाना गृह मंत्री या रक्षा मंत्री को इतने करोड़ दिए जाने हैं, जिससे हमारे देश-प्रदेश की सीमाएं सुरक्षित हो। बेचारे पत्रकार अपनी रातें काली करके भी जनता को नहीं बता पाते। एक दिन इस देश में शिक्षा, चिकित्सा, भूख, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार सब खत्म हो जाएगा। क्योंकि हमारी देश-प्रदेश की सरकारों ने बड़े महंगे दामों पर मंत्री, विधायक, कमिटी के चेयरमैन, आयोगों के अध्यक्षों को इम्पोर्ट किया है। अब चमन बर्बाद नहीं आबाद होगा। या यूँ कहें कि अब अच्छे दिन आने वाले हैं।

व्यंग्य प्रत्यंचा



बिटिया के नाम पत्र

महामारी कुछ सिखाती है

प्यारी बिटिया

इस समय जब तुम्हें यह पत्र लिख रहा हूँ, पूरी दुनिया खुली आँखों से न दिखने वाले एक वायरस (कोरोना) से उत्पन्न महामारी से जूझ रही है। चीन के हुबई प्रांत के वुहान शहर से दिसंबर माह में प्रारंभ हुई यह बीमारी आज दुनिया के अधिकांश देशों में फैलकर एक महामारी का रूप धारण कर चुकी है। लाखों की संख्या में लोग इसके संक्रमण से ग्रसित हो चुके हैं और हजारों लोग अपने प्राण गवां चुके हैं। इटली, ईरान, स्पेन और अमेरिका अपने सभी प्रयासों के बाद भी लोगों को नहीं बचा पा रहे हैं। हमारे देश भारत में भी यह बीमारी दस्तक दे चुकी है।

बिटिया इस बीमारी के प्रकोप से इतर तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि ऐसी महामारी हमें कुछ सीख भी जरूर देती है यथा हमें किसी भी वस्तु अथवा जीव को कम करके नहीं आँकना चाहिए। वर्तमान में इस महामारी का कारक वायरस इतना सूक्ष्म है कि जिसे खुली आँखों से देखा तक नहीं जा सकता किंतु उसने सम्पूर्ण पृथ्वी और उस पर निवास करने वाली पूरी मानवजाति को प्रभावित किया है।

बिटिया, मनुष्य और प्रकृति के मध्य एक संतुलन आवश्यक है। जब-जब मनुष्य ने प्रकृति के सुंदर और संतुलित स्वरूप को विरूप करने, उसे नष्ट करने और उसका अत्यधिक दोहन करने की कोशिश की है, प्रकृति ने अपने धैर्य की उच्चतम सीमा के पश्चात अपना बदला जरूर लिया है। आज जब मनुष्य ईश्वर को कोस रहा है तब दूसरी ओर सारे जीव-जंतु, पेड़-पौधे, नदियाँ, पर्वत, झरने, सागर और तालाब ईश्वर को धन्यवाद कह रहे हैं। बिटिया पूरी मानवजाति को आज कपिल के सांख्य दर्शन के प्रकृति-पुरुष संबंध को समझने की महती आवश्यकता है।

हिन्दू यह विपदा बताती है कि किसी भी संकट को टालने के लिए आवश्यक है एक मजबूत नेतृत्व, श्रेष्ठ टीम और जनता का सहयोग। इन तीनों के सामूहिक प्रयास से बड़ी से बड़ी विपदा का सफलतापूर्वक सामना किया जा सकता है, और उस पर अवश्य जीत हासिल की जा सकती है। इंसान के हौसले को बताती एक कविता तुम्हारे पापा ने भी लिखी है-

चलो करते हैं इंतजार, बिना रुके,
चलते हुए, उसके ठहर जाने का,
ठहर कर थम जाने का
इस बार इम्तिहान
है मेरे सब्र का
लक्ष्य सिर्फ जीत है
मृत्यु अगर पड़ाव है तो
पार करके जीतेंगे

बिटिया के नाम पत्र

हार उसकी निश्चय है।
जीत मेरी
तुम देखोगे।
नश्वर भले ये तन मेरा
अमर अजर कविता मेरी
इसको गाएंगी
हार उसकी बताएगी
यश गान मेरा गायेगी।

बिटिया यह महामारी हमें सिखलाती है कि हमारे भीतर एक कृतज्ञता का भाव होना चाहिए उन सभी के प्रति जो अपना जीवन संकट में डालकर हमारे लिए विपरीत परिस्थितियों एवं न्यूनतम संसाधनों के साथ कार्य कर रहे हैं। इस संकट को समाप्त करने के प्रयास में लगे सभी स्वास्थ्यकर्मी, सफाईकर्मी, पुलिस, मीडिया और अनगिनत गुमनाम व्यक्तियों के प्रति हमें कृतज्ञ होना चाहिए। 22 मार्च 2020 की वो शाम, जब इस देश के प्रधानमंत्री के आह्वान पर जनता ने ताली, थाली, घंटी, और शंख बजाकर हमारे योद्धाओं के प्रति अपनी सामूहिक कृतज्ञता व्यक्त की, राष्ट्रीय चेतना की वो मधुर ध्वनि इस देश के इतिहास में एक अमर आवाज बनकर सदैव गूँजती रहेगी।

गुड़िया आखिर में बात कुछ मेरी और तुम्हारी भी, इस वैश्विक विपदा ने तुम्हारे और मेरे बीच की दूरी को भी बढ़ा दिया है। बिटिया तुम अभी नहीं जान पाओगी इस दूरी का कारण, इस संकट की घड़ी में तुम्हारे पापा को स्वास्थ्य क्षेत्र में कार्यरत होने के कारण हर रोज संक्रमण के बीच रहना पड़ता है और उस संक्रमण का एक अंश भी अपनी प्यारी बिटिया तक न पहुँचे इसलिए पिछले कई दिनों से वे अपने घर की छत पर बने कमरे में अलग-थलग जीवन बिता रहे हैं। पता है हिन् दो दिन पहले तुम्हारे बाल मन से निकली वो बात सीधे मेरे मन को झकझोर गई थी जब मैं छत से खड़ा तुम्हें देख रहा था और तुम नीचे खड़ी कहने लगी कि

पापा, देखो न, बादल भी नीचे नहीं आते हैं और आप भी नीचे नहीं आते हो।

बिटिया लग रहा है जैसे वर्षों बीत गए हों तुम्हें गोद में लिए हुए, तुम्हें गले लगाये हुए, तुम्हें खाना खिलाए हुए, तुम्हारे साथ घूमने गए हुए, तुम्हें पास में सुलाये हुए बिटिया हो सके तो माफ करना अपने पापा को।

एक बात यह भी कि इस संकट की घड़ी में भी तुम्हारे पापा का विश्वास कायम है और इस विश्वास का सबसे बड़ा कारण तुम ही हो बिटिया। दूर से ही सही किंतु तुम्हारी एक प्यारी सी मुस्कान मुझे ऊर्जा से लबरेज कर देती है।

बिटिया एक संदेश तुम्हारे लिए भी की कोई भी विपदा इंसान के हौसले से बड़ी नहीं हो सकती। इस महामारी से उबरने की इंसान की कहानी तुम्हारे आने वाले जीवन को सदैव प्रेरित करती रहेगी।

बिटिया सामूहिक प्रयास और प्रार्थना अपना असर जरूर दिखलाते हैं। तुम सदैव आगे बढ़ो और बढ़ती रहो। विपदायें मात्र एक पड़ाव हैं जिन्हें तुम्हें पार करते जाना है बिना रुके, बिना थमे।

तुम सदैव खुश रहो।



सुरेश चंद्र

जालौर (राजस्थान)
मो. 8290711762

कोरोना को कैसे हरायें

प्रिय मित्र यश

मधुर स्मृति

हम सब यहाँ पर कुशल पूर्वक हैं और ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं कि इस वैश्विक आपदा 'कोरोना महामारी संकट' में तुम्हें भी हमेशा कुशल-मंगल रखें।

आज पूरा विश्व कोरोना संकट से जूझ रहा है। ऐसे में अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना, क्योंकि तुम उच्च शिक्षा हेतु घर से दूर कलकत्ता जैसे महान नगर के छात्रावास में अकेले रह रहे हो, अतः तुमको अपने स्वास्थ्य का ध्यान बहुत सावधानी पूर्वक रखना होगा। तुम्हारे माता-पिताजी हमेशा तुम्हारी ही चिंता में लगे रहते हैं।

मित्र! आपदायें कभी भी बोलकर नहीं आती ऐसे में मुश्किल समय का सामना हमें धैर्य के साथ करना सीखना होगा। आज भले ही युवा वर्ग पढ़-लिखकर ज्यादा पैसा कमाने विदेश जा रहा है पर मुसीबतों के आने पर तो अपनों के बीच ही भावात्मक और मानसिक संबल मिलता है। ये मैंने आज के इस मुश्किल दौर में महसूस किया है। इसलिए तुम उच्च शिक्षा अर्जित करके देश हित के बारे में ही सदैव सोचना।

मित्र! कोरोना वायरस से बचने के लिए हमेशा मुँह पर मास्क का प्रयोग करना और लोगों से एक नियमित दूरी 'सोशल डिस्टेंस' बना कर रखना। अपने हाथों को बार-बार साबुन या सैनिटाइजर से साफ करते रहना। इस महामारी से बचने के लिए सावधानी और सतर्कता बहुत ही जरूरी है। अपने कमरे में ही सब समय रहना। जब बहुत जरूरी हो तभी बाहर निकलना। बाजार से कोई भी वस्तु लाने पर उसी अच्छी तरह धोकर ही इस्तेमाल करना।

अपने खाने में अंकुरित अनाजों को ज्यादा महत्व देना। तली-भुनी चीजों और फास्ट फूड से बिल्कुल अपने को बचा कर रखना।

ज्यादा ठंडे पदार्थों का भी इस्तेमाल मत करना। याद रखना 'अगर स्वास्थ्य अच्छा रहा तो यह सब चीजें तो हम बाद में भी खा सकते हैं'। अभी तो हमें अपने 'एम्युनिटी पावर' को बढ़ाना है ताकि इस बीमारी से मुकाबला कर सके।

'कोरोना' एक ऐसा वायरस है, जिसको हम सब दृढ़ संकल्प चित्त होकर और सरकारी निर्देशों का पालन करके ही जीत सकते हैं।

तुम साफ-सफाई का भी भरपूर ध्यान रखना। अपने तौलिये, कपड़े और चहर आदि की सफाई नियमित रूप से करना। अपने आसपास के लोगों के प्रति हमेशा संवेदनशील रहना और जरूरतमंद की मदद करने को हमेशा तैयार रहना। मेरी शुभकामनाएं हमेशा तुम्हारे साथ हैं।

इसलिए दृढ़ संकल्पित होकर प्रमाणिकता भरा आचरण कर सर्वगुण संपन्न बनकर हिंदुस्तान के भावी आधार स्तंभ बनना।



तुम्हारा अभिन्न मित्र

नाम : कुंज कुमार राठी

कक्षा : 10

स्कूल : बीना मोहित मेमोरियल स्कूल ।

स्टार्टअप इण्डिया स्कीम



स्टार्टअप इण्डिया स्कीम के लाभ :

इस योजना से जुड़ने के बहुत सारे लाभ हैं जो निम्नलिखित हैं

इस स्कीम की शुरुआत भारत सरकार द्वारा 16 जनवरी 2016 को की गयी थी। स्टार्ट-अप इण्डिया स्टैण्ड अप स्कीम भारत सरकार द्वारा समर्थित योजना है। भारत सरकार द्वारा चलाये गए अभियान जैसे मेक इन इण्डिया पहल, स्टार्टअप इण्डिया अभियान और स्टैण्डअप इण्डिया ने इस विकास को बढ़ावा देने में काफी मदद की है। स्टार्टअप इण्डिया स्कीम का संचालन ' औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग Department of Industrial Policy and Promotion करती है।

इस योजना का उद्देश्य देश में रोजगार और कारोबार को बढ़ावा देना है। सरकार छोटे उद्योगों और कारोबारियों के आगे बढ़ने के लिए अनुकूलता एवं उद्यमियों को ऋण की सुविधा देने में सहायता करेगी।

इस स्कीम के लिए आवश्यक योग्यता -

- स्टार्टअप स्कीम के अन्तर्गत 5 वर्ष से अधिक समय से कारोबार कर रही कम्पनी को नहीं जोड़ा जायेगा।
- कोई भी प्राइवेट कम्पनी या एलएलपी या साझेदारी फर्म इस योजना के अन्तर्गत आएगी।
- इस स्कीम के अन्तर्गत आने वाली कम्पनी का वार्षिक टर्नओवर 25 करोड से अधिक नहीं होना चाहिए।
- स्टार्टअप कम्पनी का बिजनेस मॉडल रोजगार प्रेरित होना चाहिए।
- स्टार्ट अप कम्पनी में नवीनीकरण और तकनीकी का अधिक इस्तेमाल किया जा रहा हो।
- इस योजना के तहत शुरू की गयी कम्पनी का उत्पाद और सेवा की नवीनीकरण के लिए DIPP द्वारा स्थापित 'इन्टर मिनिस्ट्रीयल बोर्ड' से एक प्रमाण पत्र लेना होगा।



1. विभिन्न श्रम और फ़ैक्ट्री कानूनों के लिए स्वयं प्रमाणन
2. 3 साल के लिए लाभ पर कोई टैक्स देय नहीं।
3. साल के लिए पूँजीगत लाभ पर कोई टैक्स देय नहीं।
4. कार्यों को जल्द समाप्त करने के लिए एवं ज्ञान के बढ़ते आदान प्रदान और धन की प्राप्ति में मदद करने के लिए, एक केन्द्र के रूप में स्टार्टअप की स्थापना की गई है।
5. विभिन्न पहलों के माध्यम से पूरे व्यापार प्रक्रिया को सरल बनाना।
6. स्टार्टअप इण्डिया स्कीम के तहत कारोबारियों को कारोबार सम्बंधी सारी जानकारी और मंजूरी एक स्थान पर उपलब्ध करायी जाएगी।
7. वित्त पोषण सहायता और प्रोत्साहन प्रदान करना।
8. स्टार्टअप स्कीम के अन्तर्गत 1 अप्रैल 2016 के बाद रजिस्टर्ड फर्म या कम्पनियों के अगले 3 साल के लिए टैक्स में छूट दी गयी है।

9. सरकार अगले तीन सालों तक नवनिर्मित स्टार्टअप योजना के अन्तर्गत आने वाली कम्पनियों का निरीक्षण नहीं करेगी अर्थात् इस योजना के अन्तर्गत आने वाली कम्पनियों को स्व-प्रमाणीकता की छूट दी गई है।
10. स्टार्टअप योजना के तहत सरकार ने 10,000 करोड रूपये का कॉर्पस फण्ड तैयार किया गया है।
11. पेटेन्ट पंजीकरण शुल्क में 80 प्रतिशत की कमी की गई है। पेटेन्ट दाखिल करने और पेटेन्ट परीक्षा प्रक्रिया को तेजी से ट्रेकिंग के लिए कानूनी सहायता।
12. इस योजना के अन्तर्गत सरकार ने बैंकरप्सी कोड के नियमों में बदलाव करते हुए कारोबारियों को अपने कारोबार से बहार निकलने के लिए या बन्द करने के लिए 90 दिन की विण्डों सुनिश्चित की गई है।
13. पूर्व अनुभव या कारोबार आवश्यकताओं को दूर करके खरीदारी की प्रक्रिया आसान कर दी गई है।

इस उद्देश्य के लिए भारत में स्टार्टअप बिजनेस की परिभाषा कोई भी निजी सीमित कम्पनी, पंजीकृत साझेदारी या सीमित देयता साझेदारी है, जो सात साल से अधिक (बायोटेक उद्यमों के लिए दस साल) पुरानी नहीं है और जिसका टर्नओवर 25 करोड से अधिक नहीं है। स्टार्टअप की सहायता के लिए विभिन्न अभियान शुरू किए गये हैं।

स्टार्ट अप इण्डिया एक्शन प्लान के तहत, सरकार ने समाज के कमजोर वर्गों और महिलाओं के व्यवसायों को 10 लाख रू 1 करोड के बीच बैंक ऋण लेने में मदद के लिए स्टैण्डअप इण्डिया योजना जैसी पहल भी शुरू की गई है। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना जैसी पहलों को छोड़ते, सूक्ष्म उद्यमों को बनाने और बाजार में बेचने से धनराशि प्राप्त करने में मदद करने के लिए पेश किया गया है। इस तरह कि प्रोत्साहनों ने व्यावसायियों को भारत में सबसे अच्छा व्यवसाय स्थापित करने के लिए सहायक होगा।

फोबिया



नम्रता शील वाघोय

जयपुर
editormahisandesh@gmail.com

माही संदेश : अरी भागवान ! कहीं पर हो तुम, पता नहीं ये हरदम किचन में क्या करती रहती हो। जब भी तुम्हें कुछ दिखाना चाहता हूँ मुझ से दूर ही होती हो। 'मि. खन्ना जोर-जोर से आवाजें लगाकर मिसेज खन्ना को बुला रहे थे।' सब पता है फेसबुक पर कितनी लाइक्स आई हैं और कमेंट्स भी, ये सब करने के लिए ही तो सोशल मीडिया पर फोटो अपडेट करे जाते हैं। मिसेज खन्ना बर्तन समेटते हुए तेजी से बुदबुदा रही थीं। कोरोना चारों तरफ अपने पैर पसार चुका है ऐसे में घर से बाहर निकल कर जाना कहीं की अक्लमंदी है। वो भी इंसानों के लिए नहीं बल्कि जानवरों के लिए खाना और पानी रखने के लिए जाना। दिन भर चारा खाती हुयी गायों के साथ ली गई सेल्फी पर तो लाइक्स की लाईन ही लग जाती। उनके इस कार्यक्रम से प्रभावित होकर जिलाधिकारी ने भी प्रशस्ति-पत्र का सम्मान दे दिया था। अब तो मि. खन्ना एक जानी मानी हस्ती बन चुके थे। उनका जानवरों के लिए जगह-जगह पर खाना रखने जाना मिसेज खन्ना की आँखों में चुभने लगा था। वो अक्सर मि. खन्ना के काम पूरा करने में जानबूझकर देरी करने लगी। कपड़े पर स्त्री न मिलने पर भी खन्ना नाराज नहीं होते, ऐसे ही सिकुड़न वाले ही पहन कर चले जाते, सबसे ज्यादा नाराजगी तो मिसेज खन्ना को तब होती थी जब रात को उनसे इक्कीस रोटी बनवा कर वो भी टिफिन में, पता नहीं कौन सी गायों के लिए लेकर

जाते। कुछ दिन तो मिसेज खन्ना ने बना कर दे दी परंतु अब कोफ्त में आकर बनाना छोड़ दी। मि. खन्ना ने बड़े ही आराम से ये काम भी संभाल लिया, कभी-कभी हाथ भी जल जाते परंतु उनकी चिंता नहीं होती थी। मिसेज खन्ना के दिमाग का पारा ऊँचा रहने लगा कि फेसबुक पर लाइक्स पाने के लिये अपने हाथ तक जला रहे हैं ये कैसा फोबिया है। इनका ये बुखार कैसे खत्म करूँ। रात को पता नहीं गायें इनकी रोटियों को कैसे खा लेती हैं। गुस्से में आकर एक दिन उन्होंने वो रोटियाँ सड़क पर बने डस्टबिन में फेंक दी कि मैं अब इनको सिर्फ फोटो के लिए तो रोटियों को नहीं खिलाने दे सकती। गाय अपने आप ही यहाँ से खा लेंगी। चुपचाप कमरे में आकर सो गयी। थोड़ी देर बाद ही मि. खन्ना किचन में गये और रोटियाँ खोजने लगे। ये क्या क्रिया तुमने मेरी मेहनत पर पानी फेर दिया। क्या करती तुम्हारा फोटो लेने का ये फोबिया मेरी समझ से बाहर जा रहा था सो तुम्हें रोकने के लिए कुछ तो करती। उफ़ ये क्या बात कर रही हो तुम। मैंने रात में आज तक एक भी फोटो नहीं ली और न ही वो लेने लायक है। जानना चाहती हो तुम ये रोटियाँ कौन खाने आता है, आओ मेरे साथ। उन्होंने अपने कैमरे को ऑन किया तो मिसेज खन्ना की आँखें खुली की खुली रह गईं। कल रात पड़ोस में रहने वाले फोटोग्राफर सोनी छिपकर वो टिफिन उठा कर ले जा रहे थे। गरीब न होने से इज्जतदार आदमी तो तंगी के दिनों में सब के सामने माँग भी नहीं सकता और शायद सहायता करने का ऐसा फोबिया भी हर कोई नहीं रख सकता।

धर्मात्मा



डॉ. अखिलेश शर्मा

इन्दौर (मध्य प्रदेश)

editormahisandesh@gmail.com

'माई ! मैं तीरथ यात्रा पर जा रहा हूँ, अंधा आदमी हूँ। कुछ दिला दो माई मेरे पास कुछ भी नहीं है।' गली में आवाज गुँजी।

'अरे भाई ! सुनो, तुम तीर्थ यात्रा जैसा पुण्य काम करने जा रहे हो। चलो मेरे साथ आओ, मैं अभी रुपये इकट्ठे करवाए देता हूँ।' मोहल्ले के हर काम में टॉग अड़ाने वाले नेता ने कहा।

सभी मोहल्ले वालों को आवाज मार-मार कर, अंधे की दुहाई देकर, भगवान की याद दिला काफी रुपये इकट्ठे कर तीर्थ यात्री को दे दिये। अंधा जैसे ही मोहल्ले से बाहर निकला, अगले ही मोड़ पर नेताजी ने धर दबोचा- 'अबे जाता कहीं है? चल निकाल मेरा हिस्सा।।'

'बाबूजी छोड़ दो, चिल्लाओ मत, ये लो आपका हिस्सा।।' और वह अंधा आँखें खोलकर नोट गिन रहा था।

जहर पी कर
उसे तू अमृत बना ले
बदसूरत हालातों
को खूबसूरत बना ले
देख सितारों की तरफ और
अपनी किस्मत आजमां
जुस्तजू को तू
अपना मुकद्दर बना ले



लतिका सिंघा

जयपुर राजस्थान

editormahisandesh@gmail.com

रीनल स्टोन्स में होमियोपैथी कारगर



डॉ. मुकेश गुप्ता

महासचिव होमियोपैथिक
प्रेक्टिशनर्स सोसाइटी जयपुर

माही संदेश : रीनल स्टोन्स यानी मूत्र पथरी जो अक्सर किडनी में छोटे छोटे क्रिस्टल्स के बनने के कारण होती है, ये क्रिस्टल्स कैल्शियम ऑक्सलेट या फॉस्फेट या दोनों के बने होते हैं। सामान्यतः ये क्रिस्टल्स किडनी से मूत्र मार्ग तक जाते हैं और वहाँ से मूत्र त्याग करते समय निकल जाते हैं, लेकिन कभी कभी ये क्रिस्टल्स किडनी में रह जाते हैं और वहाँ अन्य कणों के साथ मिलकर स्टोन्स बना लेते हैं।

लक्षण: सर्वप्रथम पेट में दर्द जो आमतौर पर लेफ्ट या राईट साइड में होता है तथा साथ ही उल्टी का मन होता है। पेशाब करने में तकलीफ व जलन होती है, ठंड लगने के साथ ही बुखार आ जाता है। तेज दर्द के साथ कभी-कभी पेशाब के साथ खून आ जाता है।

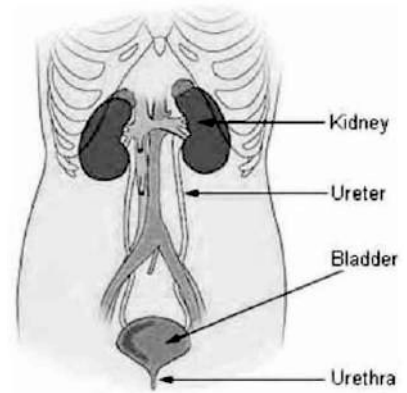
कारण:

पथरी के कई कारण हो सकते हैं जैसे पेशाब में कैल्शियम, ऑक्सलेट्स, यूरिक एसिड की मात्रा सामान्य से अधिक हो जाना, पानी का सेवन कम होना, पेशाब में संक्रमण एवं अधिक समय तक पेशाब को रोक के रखना आदि।

बचाव:

पानी अधिक मात्रा में पीना चाहिए, कैल्शियम व ऑक्सलेट युक्त पदार्थ सीमित मात्रा में ही खाने चाहिए। टमाटर, पालक, भिन्डी, बैंगन, शिमला मिर्च, काले अंगूर,

आँवला, चीकू, कॉफी, काजू, राजमा, मशरूम, फूल गोभी, मटर एवं मांसाहारी भोजन से परहेज करना चाहिए।



मूत्र प्रणाली की संरचना

3 लाइकोपोडियम 30:

गाढ़े लाल रंग का पेशाब होना जैसे तलछट जमी हो, पेट में वायु होना, धीरे-धीरे पेशाब आये तथा जोर लगाना पड़े, कभी-कभी पेशाब रुक जाता है एवं शाम 4 से 8 बजे रोग बढ़े।

4. टेरेबिन्थिना 30:

पेशाब में बहुत तेज जलन, दर्द एवं तीव्र गंध आये।

5. हाइड्रोजिया क्यू:

पेशाब में सफ़ेद चूर्ण जैसा पदार्थ आये तथा बायीं ओर दर्द रहे।

6. कैथरिस 30 :

गुर्दे व मूत्राशय में कटने फटने जैसा दर्द व सूजन पेशाब की मात्रा कम हो जाये तथा उसमें खून आये। पेशाब की इच्छा हमेशा बनी रहे।

पथरी रोकने वाले पदार्थ:

गाजर, मूली, करेला, नीबू, सेब, बादाम, काला चना, नारियल पानी, नीबू पानी, एलो वेरा जूस, छाछ, पपीता, क्रेनबेरी जूस एवं लहसुन लेने से पथरी बनने से रोका जा सकता है।

होमियोपैथी द्वारा रीनल स्टोन का इलाज:

मानव शरीर में स्टोन्स बन जाती है। इन्हें होमियोपैथी दवाओं के सेवन से दूर किया जा सकता है लेकिन इलाज हमेशा डॉक्टर के निर्देशन में ही लिया जाना चाहिए।

1. सोलिडेगो क्यू:

जब पेशाब की मात्रा कम हो जाये, गुर्दे में दर्द, पेट व मूत्राशय के आसपास तेज दर्द हो।

2. बर्बेरिस वलगरिस क्यू:

हम चीन का प्रतिस्थापन दुनिया को दे सकते हैं



अभिषेक उपाध्याय

प्रबन्धक,
एसएम डिजी कॉलेज,
चंडौसी

कोविड 19 का प्रारंभ

2019 में चीन के वुहान शहर से कोरोना वायरस शुरू हुआ। इस वायरस को कोविड 19 नाम डब्ल्यू.एच.ओ. (WHO) द्वारा दिया गया। इसे रोकने हेतु अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं को बंद किया गया है। संक्रमित लोगों की पहचान कर उन्हें अलग कर संक्रमण को नियंत्रित किया जा रहा है। विभिन्न राज्यों की सीमाओं को भी सील कर दिया गया है। संक्रमण पर लगाम लगाने हेतु लॉकडाउन का प्रयोग किया जा रहा है। इसके अंतर्गत केवल अति आवश्यक सामान, दवाएँ हेतु ही लोगों को घर से बाहर निकलने की अनुमति दी जा रही है। सभी देशों की अर्थव्यवस्था पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। निजी व सार्वजनिक उपक्रम के कार्य में संलग्न कर्मचारियों के लिए घर से काम (वर्क फ्रॉम होम) किया जा रहा है।

अवस्था के आधार पर कोविड 19 के चरण -

विशेषज्ञों ने कोरोना वायरस के संक्रमण को अवस्था के आधार पर चार चरणों में विभक्त किया है।

प्रथम चरण -

इस चरण में वे लोग संक्रमित पाए जाते हैं। जिन्होंने विदेश की यात्रा की हो अर्थात् किसी अन्य देश में जो यात्रा करके आए हों।

दूसरा चरण -

इस चरण में संक्रमित लोगों द्वारा बीमारी स्थानीय लोगों में फैलती है। जैसे विदेश से आया व्यक्ति अपने देश में अपने जानने - पहचानने वाले, रिश्तेदारों के संपर्क में आता है। जिससे वह जानने वाले व रिश्तेदारों या पहचान वाले लोगों को भी संक्रमित कर देता है। इसमें हमें वायरस के स्रोत की जानकारी होती है, जिससे स्रोत को आसानी से पहचाना जा सकता है और नियंत्रण भी किया जा सकता है।

तीसरा चरण -

इस चरण में किसी देश के अंदर संक्रमित लोगों से दूसरे स्थानीय लोगों में बीमारी फैलने लगती है।

अतः यह अत्यंत खतरनाक चरण है, जैसे इटली, स्पेन और अमेरिका जैसे देशों में बढ़ते हुए संक्रमण।

चतुर्थ चरण -

इस चरण में बीमारी महामारी का रूप धारण कर लेती है, इस चरण में अत्यंत कठिन अवस्था में आ जाते हैं। बीमारी का समाधान करना अत्यंत मुश्किल हो जाता है। अतः यह सबसे घातक चरण है।

जीवन रक्षा और आजीविका पर प्रभाव -

लॉकडाउन अर्थव्यवस्था के लिए विनाशकारी है



लेकिन जीवन रेखा में वृद्धि कर रहा है।

भारत की 75% आबादी अर्थशास्त्र के दृष्टिकोण से कर्मचारी वर्ग में है और वह या तो स्व नियोजित है या आकस्मिक कार्य करती है वह सबसे ज्यादा प्रभावित देखने को मिल रही हैं।

कोरोना वायरस का भारतीय अर्थव्यवस्था पर काफी खराब असर पड़ रहा है। दिहाड़ी मजदूर इसकी सबसे अधिक मार झेल रहे हैं। पर्यटन, एयरलाइंस और होटल उद्योग यह सभी बेहाल हैं। एयरलाइंस, होटल और पर्यटन उद्योग में लगभग बोला जा रहा है कि 3 से 4 करोड़ नौकरियां चली गई हैं एवं वेतन काटा जा रहा है। डे ऑफ लोगों को निकाला जा रहा है। रोजगार पर कोरोना की मार पड़ रही है। होटल इंडस्ट्री में गहरा असर पड़ा है।

अर्थव्यवस्था के असंगठित क्षेत्रों में लगभग 50 करोड़ कार्यबल अर्थात् कार्य करने वाले 90% हैं, जैसे - फल, सब्जी विक्रेता, मजदूर और अनुबंधित श्रमिक आदि तथा कोविड 19 के प्रसार को रोकने के लिए यातायात, रेल, उड़ान सभी पर प्रतिबंध है। जिस कारण अपने घरों से दूर एक बड़ी संख्या में लोगों के सामने आजीविका का संकट खड़ा हो गया है जो कि अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत घातक है।

भारत में लगभग 40 करोड़ लोग हैं जो कि असंगठित और अनौपचारिक क्षेत्रों में कार्य करते हैं उनकी नौकरी उनके पास आज नहीं है। राज्यों द्वारा श्रमिकों को पलायन ना करने को कहा जा रहा है। क्योंकि वहां पर जो भी कार्य चल रहे हैं। जैसे निर्माण कार्य वह सारे कार्य धीमे पड़ जायेंगे। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुमान के आधार पर कोविड 19 से लगभग 25 मिलियन नौकरियां जाने की संभावना है।

पर्यावरण पर प्रभाव -

भारत का पर्यावरण बहुत हद तक सकारात्मक रूप से परिवर्तित हो चुका है। हवा शुद्ध हो गई है। भारत की नदियों का जल निर्मल-कोमल हो गया है। जो कि कल्पना से भी बाहर की बात है। आज प्रदूषण समाप्त हो रहा है। पर्यावरण साफ हो गया है। भारत की प्रसिद्ध नदियां गंगा, यमुना आदि का जल लॉकडाउन होने के कारण स्वतः ही स्वच्छ हो रहा है। जिस को स्वच्छ करने हेतु हमारे देश में काफी आर्थिक व्यय की आवश्यकता होती है जो लॉकडाउन के द्वारा परिवर्तित विनियोग भी माना जा सकता है।

हमारे देश का वातावरण अत्यंत प्रदूषित हो चुका था, प्रदूषित वायु को स्वच्छ करने हेतु काफी बड़े आर्थिक बजट की आवश्यकता थी जो कि लॉकडाउन के माध्यम से संभव हो पाई अगर पूरे देश को लॉकडाउन के माध्यम से लॉक नहीं किया जाता। तब हमारा वातावरण उस स्थिति में आ गया था कि हमें ऑक्सीजन अर्थात् प्राणवायु लेने हेतु प्रति व्यक्ति व्यय करने की स्थिति में ला दिया था। जो कि ऑक्सीजन की कमी एवं दूषित गैसों की बढ़ोतरी के द्वारा पैदा हो रही थी।

वित्त मंत्रालय द्वारा कोविड 19 के संदर्भ में किए गए उपाय -

भारत के पास एक ऐसा कुशल नेतृत्व है जो बड़ी से बड़ी समस्या का सरलता से निदान कर सकता है और कर भी रहा है।

भारत के कुशल नेतृत्व का लोहा सभी देश मान रहे हैं। भारत में मील के पत्थर जैसे आर्थिक समस्याओं को कुशलता से सुलझाया जा रहा है।

भारतीय अर्थव्यवस्था के संकट को दूर करने के लिए वित्त मंत्री द्वारा कोविड 19 वित्तीय कार्य बल का गठन किया गया है एवं वित्त मंत्री द्वारा कहा गया है कि कोरोना महामारी से लड़ने पर खर्च सी.एस.आर. के दायरे में आएगा।

वित्त मंत्री ने आयकर दाखिल करने की 31 मार्च की समय सीमा 30 जून तक बढ़ा दी।

टी.डी.एस. भुगतान में देरी के लिए ब्याज दर 12% से घटाकर 9% कर दी गई है।

अगले तीन माह तक किसी भी बैंक के एटीएम से नकदी निकाल सकते हैं और बैंक खातों में कोई न्यूनतम बैलेंस आवश्यकता शुल्क नहीं होगा।

भारतीय सरकार और आर.बी.आई. (R.B.I.) के आवश्यक कदम -

सरकार एवं रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया द्वारा समय-समय पर की गई समीक्षा नीति एवं उसके आधार पर आर्थिक परिवर्तन से भारत फिर भी आर्थिक संपन्नता की ओर अग्रसर है।

भारतीय मुख्य आर्थिक सलाहकार कृष्णमूर्ति सुब्रह्मण्यम ने कहा था कि सरकार और रिजर्व बैंक कोरोना वायरस के कारण बाजार के भय से निपटने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाएंगे और बताया कि भारतीय अर्थव्यवस्था के बुनियादी संकेत मजबूत रहेंगे। हमारे देश के पास विदेशी मुद्रा भंडार पर्याप्त मात्रा में है। भारतीय अर्थव्यवस्था को लगभग 1 से 2 साल इस स्थिति को सही करने में लग सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने बोला है कि सुधार हेतु 2021 तक का समय लग जाएगा।

शेयर बाजार पर बड़ा असर -

कोविड 19 के प्रकोप के पहले ही इक्रिटी विनियोजको को अर्थात् समता विनियोजको की संपत्ति का 52 लाख करोड़ रूपए डूब गया है। बेंचमार्क सेसेक्स और निफ्टी कि जनवरी माह के बाद सबसे अधिक गिरावट हुई है, जो कि 35% से अधिक है।

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का सुधार हेतु योगदान -

वर्तमान में हमारी सभ्यता को दुनिया मान रही है जैसे दुनिया हमारी सभ्यता से नमस्ते करना सीख रही है।

भारतीय लोग भारत की प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता को भूलते जा रहे हैं और पाश्चात्य सभ्यता को ग्रहण करते जा रहे हैं, परंतु कोरोना की बीमारी से बचाव भारतवर्ष की प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता का बहुत बड़ा योगदान है।

प्रकृति एवं ओजोन परत पर सकारात्मक आर्थिक प्रभाव -

प्राकृतिक संपदा को बचाने के लिए हम कुछ भी नहीं कर रहे थे और प्रकृति बचाओ जैसी आवाजें उठ रही थी जिनको हम अनसुना करके उसके दोहन में लगे हुए थे प्रकृति को बचाने का कोई

और माध्यम इतना प्रभावी नहीं होता, जितना कि लोकडाउन के माध्यम से संभव हुआ है।

वर्तमान में इंसान परेशान है लेकिन प्रकृति पेड़-पौधे और जीव-जंतु चैन की सांस ले रहे हैं। अप्रैल के शुरू में वैज्ञानिकों को उत्तरी ध्रुव के ऊपर स्थित ओजोन लेयर में 1000000 वर्ग किलोमीटर का छिद्र दिखा था। वैज्ञानिकों का दावा था कि यह अब तक के इतिहास का सबसे बड़ा छिद्र है लोकडाउन लागू होने की वजह से प्रदूषण दूर हो रहा है जिससे नॉर्थ पोल स्थित छिद्र भर गया है।

पृथ्वी के उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुवों के ऊपर ओजोन लेयर है, उत्तरी ध्रुव के आर्कटिक वाले क्षेत्र के ऊपर एक ताकतवर पोलर वॉर्टेक्स बना हुआ था जो अब समाप्त हो चुका है। इसके ऊपर ऊंचाई पर स्थित स्ट्रेटोस्फियर पर बन रहे बादलों से ओजोन लेयर पतली हो रही थी। छिद्र कम होने के कारण तीन है -

बादल

क्लोरोफ्लोरोकार्बंस

हाइड्रोक्लोरोफ्लोरोकार्बंस

इन तीनों कारणों के स्ट्रेटोस्फियर में बढ़ोतरी हो गई थी और सूर्य की अल्ट्रावायलेट किरणें इस से टकराती हैं। उससे बलोरिन और ब्रोमीन के एटम निकल रहे थे। यह एटम ओजोन परत को पतला करने का कारण है और लॉकडाउन के कारण इसमें बढ़ोतरी नहीं हुई जिस कारण अब नॉर्थ पोल स्थित यह छिद्र भर चुका है और एक नामुमकिन कार्य इस लॉकडाउन के कारण संभव हो पाया है।

कोविड 19 के लिए योजनाएं

कोरोना कवच - भारत सरकार

ब्रेक द चेन - केरल

ऑपरेशन शील्ड - दिल्ली सरकार

नाड़ी एप्प - पुंदुचेरी

रक्षा सर्व - छत्तीसगढ़ पुलिस

iGOT - भारत सरकार

कोरोना केअर- फोनपे

प्रज्ञम एप्प - झारखण्ड

कोविड केअर एप्प - अरुणाचल प्रदेश

कोरोना सहायता एप्प- बिहार

आरोग्य सेतु - भारत सरकार

समाधान - HRD मिनिस्ट्री

5T - दिल्ली

कॉरेन्टाइन एप्प - IT एप्प

करुणा एप्प- सिविल सर्विस एप्पोजिशन

V-सेफ टनल -तेलंगाना

लाइफलाइन UDAN - सिविल एविएशन मिनिस्ट्री

Vera's कोविड 19 मॉनिटरिंग सिस्टम - तेलंगाना

सेल्फ deceleration एप्प-नागालैंड

ऑपरेशन नमस्ते - इंडियन आर्मी

कोरोना वाच एप्प - कर्नाटक

नमस्ते ओवर हैंडशेक- कर्नाटक

मो जीवन - ओडिशा

टीम 11- उत्तर प्रदेश

फीफा CAMPAIGN- सुनील क्षेत्री

भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोविड 19 का

आने वाले समय में प्रभाव -

भारत से बड़ा पर्यटन केंद्र कोई हो ही नहीं सकता। सभी लोगों को पता चलेगा कि भारत में खतरे कम है।

सरकार मेक इन इंडिया को बढ़ावा दे रही है, हमारी कुल अर्थव्यवस्था का 60% से 65% एमएसएमई से आता है।

सरकारी व्यय की बचत करने के लिए सांसदों की 30% वेतन कट हो रहा है, लोग अपनी मर्जी से विदेशी यात्रा कम करेंगे।

तीसरे चरण के प्रभाव से हमारी अर्थव्यवस्था और नीचे चली जाएगी, यह अर्थव्यवस्था के दूसरे हिस्सों तक पहुंचने की संभावनाएं और भी ज्यादा बन रही हैं, जो फर्म कमजोर हैं उनके सामने नकदी के प्रवाह की कमी का सामना करना पड़ेगा और कर्मचारियों जैसे श्रमिकों के वेतन कटौती एवं उन्हें छटनी की समस्या का सामना करना पड़ सकता है। जिससे उपभोक्ता मांग भी प्रभावित होगी, समस्याओं के निराकरण हेतु भारतीय रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया कुछ बड़े निर्णय ले रहा है जिससे राहत मिलने की संभावना है।

कंपनियों का लगभग 80% नगदी प्रवाह प्रभावित हो गया है। माल और सेवाओं में बहुत से सामान के रेट बढ़ गए हैं। अर्थव्यवस्था धीमी पड़ जाएगी।

निर्यात रुका हुआ है, केवल आपातकालीन दवाएं जैसी चीजें ही निर्यात हो रही है।

चीन ने यह दर्द पूरी दुनिया को दिया है।

अतः इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत में निवेश निर्भरता बढ़ेगी। हम चीन का प्रतिस्थापन दुनिया को दे सकते हैं।

कोविड 19 को भारत ने दूसरे देशों की अपेक्षा अधिक नियंत्रित कर रखा है। भारत में कृत्रिम हॉशियारी भरपूर है। भारत दुनिया का दिमाग है। आने वाले समय में, भारत में विदेशी निवेश बढ़ने का अनुमान लगाया जा रहा है।

कोरोना जी तुम मत जाना



महेंद्र कुमार वर्मा

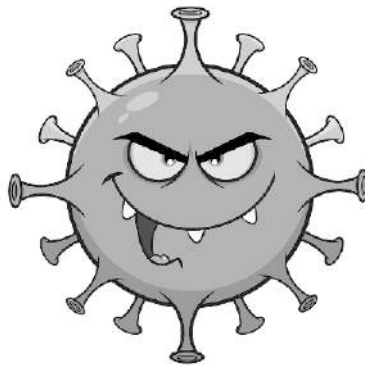
पुणे, महाराष्ट्र
editormahisandesh@gmail.com

जिंदगी के पहिये नहीं होते मगर ऊबड़खाबड़ धरातल जरूर होती है, उसी राह पे चलते जाना है। अच्छी खासी जिंदगी चली जा रही थी, हालाँकि महंगाई का रोना उस समय भी था, भ्रष्टाचार गुल मोहर की तरह फूल फल रहा था, बेरोजगारी चरम सीमा पर थी। मगर कोरोना महामारी ने समूचे देश को बंद कर दिया। जो जहाँ है वहीं रहे की स्थिति आ गई। मगर एक भारतीय परिवार की जिंदगी में कोरोना से उत्पन्न लॉक डाउन ने क्या क्या सितम ढाए, कितने दुःख दिए यह या तो रब जनता है या वो।

भारतीय गृहणी लॉक डाउन में सोचती है। वाह वो क्या दिन थे जब कोरोना नहीं था, लॉक डाउन नहीं था। जहाँ मर्जी वहाँ चले जाओ, मॉल, ब्यूटी पार्लर, हर जगह निर्वाध जा सकते थे और घर में सुबह पतिजी को दफतर और बच्चों को स्कूल भेजने के बाद फुर्सत ही फुर्सत रहती थी। मजे से टीवी देखो, पड़ोसन से गप्पें लड़ाओ, किटी पार्टी के मजे लो, पानी पूरी एन्जॉय करो। रविवार को सैर सपाटा, मूवी देखना, बाहर डिनर, वाह क्या मजे थे। पता ही नहीं चला की अच्छे दिन कब आए और कब चले गए। मगर लॉक डाउन शुरू होते ही सब ख़त्म।

लॉक डाउन में बच्चों की लम्बी छुट्टियाँ लग गई, पति जी घर से ही काम करने लगे। और गृहणी उसकी परेशानियाँ बढ़ गईं। अब तो रोज नई नई डिश बनाने को फरमाइशें आने लगीं। ऐसा लगा उसे जैसे उसके काम के घंटे बढ़ गए हों। वह पार्ट टाइम से पदोन्नत होकर फुल टाइम में आ गई हो। गृहणी पर तो चारों

ओर से मुसीबते आनी शुरू हो गईं। पहला झटका तब लगा जब काम वाली बाई दीर्घ कालीन अवकाश को चली गई। भाई कोरोना है, बीमारी फैल सकती है। सब्जी या कोई सामान घर आए तो पहले उसे सेनेटाइज़ करो



फिर उसे धूप दिखाओ, फिर काम में लाओ। यानी गृहणी का काम बढ़ता चला जा रहा है। और ये मुआ लॉक डाउन अपना कार्यकाल हर बार नई शतों के साथ बढ़ता चला जा रहा है।

कोरोना काल में गृहणी अक्सर सोचती, यदि कोरोना नहीं होता तो ये होता, वो होता। हाय कितने दिन हो गए नई साड़ी खरीदे हुए। शॉपिंग मॉल की कितनी याद आ रही है। मगर तभी उसकी हसरतों पर ब्रेक लगाता है पति जी की चाय की फरमाइश से। दिन भर चाय बनाते बनाते मन ऊब गया है। खाली चाय बनाना होता तो ठीक था, मगर चाय के बाद चाय के बर्तन भी तो धोने पड़ते हैं।

गृहणी एक नारी भी है। सजना संवरना उसे भी सुहाता है। मगर लॉक डाउन में सौंदर्य प्रसाधन सामग्री जैसे क्रीम, पाउडर न मिल पाने से बड़ी दुविधा में रहती है। कल ही एक सखी ने वीडियो कॉलिंग की मगर श्रीमती जी ने फोन उठया ही नहीं -बोली, किस मुँह से बात करती, इस मुँह से, ना बाबा ना। लॉक डाउन

में पति से झगड़े भी कम हो गए हैं। क्या करे बेचारी अब वो मायके जाने की धमकी भी तो नहीं दे सकती है।

लॉक डाउन ने पुरुषों को भी कम कष्ट नहीं दिए। उसे भी गृह कार्य में हिस्सा लेने की हिदायतें दी जाती हैं। उसे बताया जाता है कि वो भी घर का हिस्सेदार है। उन्हें काम का ऑप्शन दिया जाता है। झाड़ू तुम लगाओ, बर्तन मेरे जिम्मे। नाश्ता तुम बनाओ, खाना मेरे जिम्मे। एक तो ऑफिस का काम वर्क एट होम करो साथ ही होम का भी वर्क करो। उसकी शाम की महफिलें कोरोना की भेंट चढ़ गईं।

लॉक डाउन से कुछ फायदा भी मिला है गृहणी को। अब शाम को पतिदेव अचानक चार दोस्तों को घर लाकर नाश्ते का फरमान जारी नहीं कर पा रहे हैं। पड़ोसन भी शक्कर के बहाने गप्प मारने नहीं आ पा रही है। काम वाली बाई से मिलने वाली चुगली अब हवा हो चली है। अब दूर दराज के रिश्तेदार जो सरकारी काम से आते थे मगर रुकते यहीं थे, उनका आना बंद हो गया है।

लॉक डाउन से घर की बचत भी बढ़ गई है। सिनेमा बंद। होटलों में शानदार डिनर ख़त्म। पर्यटन के फालतू खर्चों पे नियंत्रण। आए दिन समोसा पार्टी की छुट्टी। आये दिन आने वाले सेल की खरीदी से मुक्ति। सैलून का खर्च बंद।

कुछ कष्ट है, कुछ आराम है, अब तो लोगों को लॉक डाउन में रहने की आदत सी हो गई है। लॉक डाउन में परिवार के साथ साथ रहने का सुख। टी वी पे रामायण, महाभारत देखने का सुख। अब तो कोरोना की दो चार बातें कह सुन न ले तो मन ही नहीं लगता है। मन से एक ही आवाज बाहर आती है...कोरोना जी तुम मत जाना।

मूल खासी (मेघालय) मातृवन्शात्मक समाज में नारी



डॉ अनीता पंडा

अतिथि प्रकाश, मार्टिन लुथर
क्रिश्चियन मिशनरियल, शिलांग
चरिथ टीकरी, आई.सी.एस.आर., दिल्ली
aneeta.panda@gmail.com

भारत के पूर्वोत्तर राज्य अपनी संस्कृति एवं विरासत तथा इसमें सन्निहित मानवीय मूल्यों की दृष्टि से विशिष्ट स्थान रखते हैं। यहाँ की मूल जनजातीय संस्कृति एवं परम्परा में गम्भीर चिंतन है, जिसको उजागर करना आवश्यक है। ऐसे ही मेघालय की गारो, खासी और जैन्तिया या पनार जनजातीय संस्कृति है। यहाँ भारत के अन्य राज्यों की भाँति पितृसत्तात्मक के विपरीत एक अलग प्रकार की मातृवन्शात्मक परम्परा मिलती है, जो आज भी चली आ रही है। आमतौर पर संतान का कुल-नाम पिता के वंशावली से निर्धारित होता है परन्तु मूल खासी-पनार, गारो समाज में संतान को अपना नाम और वंश माँ से मिलता है। इसके कारण लोग सोचते हैं यह एक ऐसी जगह है, जहाँ स्त्रियाँ शासन करती हैं।

ऐसा कहा जाता है कि आरम्भ में देश के अन्य क्षेत्र की तरह यहाँ भी पितृसत्तात्मक व्यवस्था थी। मातृवन्शात्मक व्यवस्था के पीछे एक ठोस वजह थी। कारण यह था कि घर के पुरुष लम्बे समय के लिए युद्ध और शिकार करने के लिए घर से बाहर चले जाते थे अक्सर वे लौट कर नहीं आते थे। ऐसे में बच्चे केवल अपनी माँ के ही पास रहते थे और घर की महिलाओं को सारी जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती थी। यह देख कर समाज के बड़े-बुजुर्गों ने सलाह-मशविरा करके निर्णय लिया और संतानों को उनकी माँ के वंश का नाम दिया। तब से यह परम्परा आज तक चली आ रही है। नारी को इतना सम्मानजनक स्थान देने का उत्कृष्ट उदाहरण और कहीं मिल सकता है। 'वास्तव में इस व्यवस्था में स्त्रियों को विशेष स्थान प्राप्त है

क्योंकि वे उत्पादन एवं प्रजनन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, उनमें मातृत्व शक्ति है। अपने वंश समूह की प्रेरक होने के कारण महिला को संपत्ति का अधिकार मिला है 1 (अनुवाद)

खासी रिवाज के अनुसार वर विवाहोपरांत वधू के घर जाता है और संतानोपरांत स्थाई रूप से रहने लगता है। साथ ही संपत्ति की हकदार सबसे छोटी बेटा होती है, जो अपने माता-पिता एवं घरवालों की देखभाल करती है। शिलांग टाइम्स की संपादिका 'पैट्रीशिया मुखीम' का कहना है, "सबसे छोटी बेटा को संपत्ति का वारिस बनाने की वजह यह है कि माँ-बात को ऐसा लगता है, वह मरते दम तक उनकी देखभाल कर सकती है और वे बेटा पर आश्रित रह सकते हैं।" अगर परिवार वालों को लगता है कि वह अपनी जिम्मेदारी ठीक से निभा पा रही है तो वह संपत्ति घर की बड़ी बेटा को हस्तांतरित कर दी जाती है पर संपत्ति की अधिकारी स्त्री ही होती है। अगर किसी घर में लड़की नहीं है तो उसे एक बच्ची गोद लेना पड़ता है जिससे वह वारिस बन सके क्योंकि नियमों के मुताबिक उनकी संपत्ति बेटे को नहीं दी जा सकती है। ध्यातव्य है कि यद्यपि संपत्ति की अधिकारी महिला होती परन्तु उससे सम्बन्धित कोई फैसला वह अकेले नहीं ले सकती है। ऐसे फैसले में मामा एवं भाइयों की सहमति आवश्यक है। खासी समाज में मामा की अहम भूमिका होती है। मूल खासी समाज में स्त्रियों का विशेष स्थान है। जो 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' को चरितार्थ करती है परन्तु कुछ सीमाओं के साथ। राधोन सिंग बेरी खर्वान्लांग द्वारा

खासी में लिखित (खासी आचार संहिता / नियम) तथा अंग्रेजी में बिजोया सविनय द्वारा अनुवादित का जिन्ससेंग त्यम्मेन अर्थात् The Teaching of Elders में नारी की खासी समाज में सम्मानजनक स्थान को इस प्रकार वर्णित किया गया है :

*हर स्त्री है धन की देवी के समान,
वह रखती है सुरक्षित कमाई और
सबकी अच्छी सेहत;
महिला है घर की नींव,
स्वीकारती है दोनों सौभाग्य और
दुर्भाग्य;
महिला है रानी मधुमक्खी जैसी,
वह होती है और सुन्दर, जब हो शांति से
भरी;
महिला है भरी सूर्य के चमकसी,
वह बढ़ती है और प्रकाशित करती है
अपनी पवित्रता से;
औरत है एक सोने की मोहर,
है वह किफायती और करती है संपत्ति
की देखभाल;*

सिलबी पाससाह, जो मेघालय की प्रथम हिंदी शिक्षिका, राष्ट्रपति शिक्षक सम्मान एवं संरक्षिका मूल खासी संस्कृति (लोक नृत्य, संगीत आदि) का मंतव्य है, खासी समाज में महिलाओं का बहुत सम्मानजनक स्थान है क्योंकि परिवार की केंद्र बिंदु स्त्री (माँ) होती है। पूरे परिवार की देखभाल करती है और प्रत्येक निर्णय में उसकी अहम भूमिका होती है। इस समाज में बेटे और बेटियों में भेदभाव नहीं होता है। पहले स्त्रियों को परिवार

सम्बंधित हर कार्य आदि के लिए निर्णय लेने की आज़ादी थी परन्तु उन्हें घर से बाहर कार्य करने और प्रशासनिक सम्बन्धी निर्णय की छूट नहीं थी पर समयानुसार परिवर्तन आया है। इसके पीछे मूल कारण है परिवार की स्त्रियाँ उस वंश की प्रतिष्ठ का प्रश्न है। को 'जिनसनेंग ल्यम्मेन' में कहा गया है।

**स्त्रियों को न दो बहुत अधिक आजादी,
दुनियादारी उनमें नहीं आ सकती;**

उनका स्त्रीत्व होगा पतित,

**वह देगी धमकी, करेगी अकारण बहस;
इससे खो देगी वह अपना सम्मान।**

खासी समाज में महिलाओं का बहुत ऊँचा स्थान है परन्तु उनकी कुछ मर्यादाएँ भी हैं। ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि स्त्रियाँ भावुक होती हैं। वे अक्सर दिल से निर्णय ले लेती हैं, जो सही नहीं हो सकता है। यद्यपि घर के सभी निर्णय लेने में उनकी विशेष योगदान होता है परन्तु घर के बाहर बड़े-बड़े निर्णय लेने से उन्हें अलग रखने की बात कही गई है। 'स्त्रियाँ! जब आप करें बातचीत, आप बोलें, जब आप मुस्कराएँ अपने दाँत नहीं दिखाएँ,' साथ ही उन्हें अनजान लोगों से ज्यादा घुलने-मिलने से रोका गया है। इसके पीछे कारण यह है कि लोग सच जाने बिना उनको बदनाम कर सकते हैं। यह नियम केवल स्त्रियों के लिए ही नहीं हैं अपितु पुरुषों के लिए भी हैं।

**'मत आकर्षित हो, जब औरत हो बहुत
सुन्दर, प्रकट होगी उसकी सच्चाई तो हो
इसके विपरीत;...'**

इसके साथ ही मूल खासी समाज विवाह में स्थायी संबंधों पर जोर दिया गया है खासतौर पर जब पत्नी गर्भवती हो क्योंकि इनका मानना है।

**'एक बार तुमने किया विवाह और जुड़े
एक वंश से,**

**मत छोड़ना अपनी पत्नी को, जब हो वह
गर्भवती;**

**अगर कोई करता है यह जघन्य पाप,
वह होगा प्रत्येक व्यक्ति द्वारा बहिष्कृत,
नष्ट करेगा वह अपना जीवन और
अस्तित्व।**

खासी समाज में प्रेम विवाह को पूर्णरूपेण मान्यता प्राप्त है। यहाँ लड़के और लड़कियाँ स्वेच्छ से ही जीवन साथी का चुनाव करते हैं। इस समाज में जाती-पाँत का कोई बंधन नहीं है केवल

एक वंश (कुर / गोत्र) में विवाह निषेध है चाहे हो पिता का या माता का गोत्र। वे ऐसे संबंधों को एक गंभीर दोष माना जाता है। अतः किसी से विवाह करने के पहले उनके गोत्र या कुर (खासी में) की गंभीरता से जाँच करने का निर्देश दिया गया है। ध्यातव्य है कि खासी समाज में मातृवंशात्मक व्यवस्था होने के कारण न ही यहाँ कोई दहेज प्रथा है क्योंकि विवाह के बाद वर-वधू के घर यानि ससुराल चला जाता है और संतान के जन्म के बाद स्थायी रूप से रहने लगता है। बहु विवाह स्त्री एवं पुरुष दोनों ही कर सकते हैं और यह समाज द्वारा स्वीकृत है तथा तलाक और विधवा-विवाह आसानी से हो जाते हैं। एक तलाकशुदा और विधवा स्त्री को भी समान इज्जत प्राप्त है। 'वास्तव में हमारी सामाजिक नियम बहुत सरल, सीधे-सादे हैं और इसमें स्त्रियों को अपना निर्णय लेने की पूरी स्वतंत्रता है। अन्य समाज की तरह तलाकशुदा एवं विधवा-विवाह आदि को ले कर कोई पूर्वाग्रह नहीं है। इसे सहजता से लिया जाता है। हाँ शिक्षा एवं जारुकता के अभाव में कम उम्र में ही लड़के-लड़कियाँ विवाह कर लेते हैं, जो शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कारण धीरे-धीरे कम हो रहा है।

'कानूनन कोई खासी पुरुष गैर खासी स्त्री से विवाह कर लेता है तो उनकी संतानें खासी मानी जाएँगी अगर उसकी पत्नी खासी रीति-रिवाज, धर्म, नियम एवं अनुष्ठान को अपनाने के लिए तैयार हो जाए। चूँकि खासी एक

मातृवंशात्मक समाज है अतः कुछ अनुष्ठान करके वह खासी बन सकती है। अनुष्ठान के द्वारा धार्मिक स्वीकृति के बाद वंश का नया उपनाम (सरनेम) दिया जाता है। उसी समय से वह खासी बन जाती है और सम्पत्ति की अधिकारी बन जाती है।

स्थानीय दरबार (पंचायत) स्तर पर महिलाओं की भागीदारी नहीं होती है, इसमें पुरुषों का एकाधिकार होता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि महिलाओं की बात नहीं सुनी जाती है। किसी भी मामले में वे अपने विचार प्रकट करने के लिए स्वतंत्र हैं पर वे दरबार में स्वयं उपस्थित नहीं हो सकती हैं। वह अपनी बात घर के किसी पुरुष सदस्य पिता, मामा या चाचा को प्रतिनिधि बना कर प्रकट कर सकती है। 'महिलाएँ दरबार में खास परिस्थितियों में उपस्थित हो सकती हैं, जब किसी महिला को उसके गलत कार्यों के लिए सजा देनी हो, तब भी वे अपना केस स्वयं नहीं अपितु उसके मामा / चाचा के माध्यम से कर सकती हैं।

मूल खासी समाज में महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी मानी जाती है। वे घर की मुखिया होती हैं और कृषि, व्यापार आदि में भारी संख्या में सफलता पूर्वक कार्य कर रहीं हैं परन्तु राजनितिक स्तर पर उनकी भागीदारी बहुत कम होती है।

मातृवंशात्मक समाज में महिलाओं से सम्बन्धित अपराध नहीं के बराबर है। देश के अन्य भागों की तुलना में महिलाएँ सुरक्षित हैं और उन्हें समाज में विशिष्ट स्थान प्राप्त है। इस समृद्धशाली जनजातीय मूल खासी समाज में नारी से सम्बंधित नैतिक मूल्य एवं परम्पराएँ हैं जैसे- जातिगत एवं लिंगगत भेदभाव दहेज प्रथा रहित, विधवा विवाह, पुनर्विवाह आदि को मान्यता तथा सम्पत्ति में महिलाओं का अधिकार, अपने विचारों को प्रकट करने की पूर्ण स्वतंत्रता आदि, जो समाज के लोगों के लिए अनुकरणीय हैं।

गुढ़ा बैरसल पंचायत के कोरोना योद्धाओं को सलाम

माही संदेश/ जयपुर जिले की दूदू तहसील के अंतर्गत आने वाली गुढ़ा बैरसल पंचायत में राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य व पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी, कोर कमेटी अध्यक्ष बालकृष्ण अपनी समस्त टीम के साथ कोरोना योद्धा के रूप में सक्रिय रूप से अपनी अहम भूमिका निभाई और वर्तमान समय में आयोजित की गई बोर्ड परीक्षाओं में बच्चों को सेनेटाइज / मास्क आदि

व्यवस्थाओं के साथ परीक्षा दिलाई- पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी बालकृष्ण ने माही संदेश को बताया कि कोरोना संकट के समय सर्वे का कार्य किया गया जिसमें घर-घर जाकर पता लगाया गया कि कोई कोरोना से संबंधित संक्रमित मरीज तो नहीं है। इस दौरान एनएफएसए के अंतर्गत तकरीबन 1500 क्विंटल गेहूं का वितरण किया गया इसके अलावा जिनको राशन से गेहूं नहीं मिलता

था उन्हें नॉन एनएफएसए के माध्यम से गेहूं का वितरण किया गया, विद्यालय को क्वारंटाइन सेंटर के रूप में तैयार कर यहां संक्रमित लक्षण वाले मरीजों को रखा गया इसके साथ साथ सदिग्ध लक्षण वाले व्यक्तियों के होम क्वारंटाइन पर भी कार्य किया गया। विभिन्न भामाशाहों द्वारा खाद्य सामग्री की तकरीबन 1000 किट उपलब्ध कराई गई जिनका वितरण विधायक बाबू लाल नागर द्वारा किया गया।



कोरोना योद्धा जो इयूटी पर रहे हमेशा तैनात

बालकृष्ण (प्रधानाचार्य व पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी, कोर कमेटी अध्यक्ष), केसर लाल कुमावत, विष्णु प्रकाश लाटा, कैलाश चंद कुमावत, भंवर लाल कुमावत, ओमप्रकाश कुमावत, मदन लाल कुमावत, राजेन्द्र मीणा, गणपत लाल यादव (अध्यापक), रेशमा हाड़ा, किरण कुमारी नेहरा, सुनीता गहलोत आदि अध्यापिका, गोपाल लाल कुमावत (सरपंच), बंशीलाल चौधरी, ओमप्रकाश कुमावत आदि (पंच) राजेन्द्र कुमार मीणा, हनुमान सारस्वत (वीएलओ) डॉ-मीरा (चिकित्सक), रेणु (एएनएम) व आंगनबाडी कार्यकर्ता, आशा सहयोगिनी आदि।



मास्क की रोचक मनोरंजक बातें



अशोक वाधवाणी

कोल्हापुर, महाराष्ट्र,
मो. 9421216288

माही संदेश : कोरोना काल में भी पश्चिम के कुछ देशों में मुंह ढंकने के लिए मास्क पहनना अनुचित माना जाता है। चोर अपने कारनामों को अंजाम देने के लिए मुंह ढंकते हैं। इसी कारण अमरीकी राज्यों, कनाडा और कई युरोपिय देशों में मास्क न अपनाना वहाँ के सरकार की मजबूरी, लाचारी भी है। कोरोना काल में भी वे इसे कलंक के रूप में देखते हैं। कई अमेरिकन और दूसरे पश्चिम देश वाले इसे अपने अधिकारों पर अंकुश भी मानते हैं। अमरीका के राष्ट्रपति ट्रम्प खुद मास्क पहनना पसंद नहीं करते हैं। कुछ दिनों पूर्व अमरीका में मास्क न पहनने वालों को ट्रम्प का समर्थक और पहनने वालों को ट्रम्प विरोधी समझा जाने लगा था। आज देश-दुनिया में वैश्विक महामारी के चलते जो हालात पैदा हुए हैं उससे तो यही

लगता है कि और कुछ महिनो, वर्षों तक मास्क से छुटकारा पाना संभव नहीं। देश की कई नामी-गिरामी कंपनियों ने आकर्षक रंगों, डिजाइन वाले मास्क बनाने की पहल शुरू की है। शर्ट के साथ मैचिंग कपड़े के मास्क



बाजारों में बिकने शुरू हो चुके हैं। शादी के जोड़ों के साथ मैचिंग मास्क का प्रचलन चल पड़ा है। सोशल मीडिया पर भी अनगिनत अजब - गजब नमूनों के मास्क देखने को मिलते हैं। ले सुपब की वेबसाइट पर आपको 6 न्यू मास्क स्टाइल्स अराइविंग डेली का संदेश देखने को मिलेगा। मतलब यहाँ पर आपको रोजाना नये-नये ब्रांड के मास्क दिखाई देंगे। देख कर, पसंद कर इन्हें खरीदा

जा सकता है।

अधिकतर लोगों को प्लेन मास्कों में देखा जा सकता है। आजकल प्रिंटेड, कार्टून वाले मास्क भी बाजारों में धड़ल्ले से बिक रहे हैं। वृंदावन के आश्रम में रहने वाली विधवाएँ विशेष वृंदावन थीम वाले सिल्क एवं कॉटन के डिजाइनर मास्क तैयार कर रही हैं। उन चित्रों को मास्क के लिए चुना गया है जो भगवान श्री कृष्ण के आसपास घूमते हैं। इसे ऑनलाइन बेचा जाएगा। इसके अलावा नेपाल देश से आयी मिथिला (मधुवानी) पेंटिंग से भी मास्क सजाए जा रहे हैं जोकि थोड़े महंगे होते हैं। पूरी तरह प्राकृतिक चीजों, रंगों और हाथों की हुनरता आंखों को आकर्षित करती है। इसे लोकप्रिय कला का सदुपयोग भी कह सकते हैं। थोड़े दिनों बाद ही और कुछ आश्चर्यचकित करने वाले मास्क देखने को मिलेंगे, ऐसी आशा करने में कोई हर्ज नहीं।

आर्टिस्ट चंद्रप्रकाश गुप्ता ने शहीद का तैल चित्र किया परिजनों को भेंट

माही संदेश : दिल्ली हिंसा में शहीद हुए थे हैड कांस्टेबल रतन लाल आर्टिस्ट चंद्रप्रकाश गुप्ता का शहीद जवानों के परिजनों से मिलकर जीवंत तैल चित्र भेंट करने का अभियान पिछले 21 वर्षों से जारी है, अपनी कूची से देश प्रेम बयां करने वाले जयपुर के वरिष्ठ चित्रकार चंद्रप्रकाश गुप्ता ने इस बार फरवरी में दिल्ली हिंसा में शहीद हुए फतेहपुर सीकर निवासी हेड कांस्टेबल रतन लाल का तैल चित्र उनकी पत्नी वीरांगना पूनम बारी व बेटी सिद्धि व कनक पुत्र राम को उनके घर जाकर भेंट किया इस मौके पर मेहंदी आर्टिस्ट मोहनलाल चौहान भी मौजूद थे, शहीद के तैल चित्र को देखकर वीरांगना पूनम व शहीद के बच्चे भावुक हो गए ये वो पल था जब हर आंख स्वतः नम हो उठी, उल्लेखनीय है कि चित्रकार चंद्रप्रकाश गुप्ता शहीदों के तैल चित्र बनाकर उनके गांव-गांव जाकर 265 शहीदों के परिजनों को तैल चित्र भेंट कर चुके हैं।



एक छोटा वायरस और बड़ी सी दुनिया

दीवारें इन दिनों बुझी बुझी सी रहती हैं
 झाड़ फ़ानूस भी मुस्कुराना मूल गया है..
 सोफ़ो फुसफुसा के पूछ रहे हैं
 माई ये चल क्या रहा है
 जिस घर में शनिवार कभी सोता ही नहीं था ...
 वहाँ इतना सन्नटा कैसे पसर रहा है ...
 साड़ियों की अपनी ही शिकायतें हैं
 अलमारी में लटके लटके बोर हो रही हैं....
 घूमने फिरने की आदी जो हैं
 अब बाहर निकलने को भी तरस रही हैं....
 बिन्दी, टीकी, लाली, कानों की बाली ...
 सब आराम फ़रमा रही हैं आजकल
 सब तरफ़ बस लेपटोपों और फ़ोनों का बोला-बाला है ...
 सुबह सुबह झाड़ पोंछ कर चार्ज भर देते हैं इनमें ...
 मिलने-मिलाने में इनका अन्दाज जो निराला है ...
 एक छोटे से वायरस ने
 इस बड़ी सी दुनिया को हिला डाला है
 सोचती हूँ कुछ तो ग़लत रहा होगा
 सोचती हूँ कोई तो हम से ख़फ़ा होगा
 किसी का तो दिल हमने दुखाया होगा
 किसी की ज़मीन पर बेजा हक़ ज़रूर जमाया होगा
 शायद ये प्रकृति का अपना अन्दाज है समझाने का
 शायद ये तरीक़ा है उसका सबक़ सिखाने का
 एक वादा कर ही लेते हैं अपने आप से
 प्रकृति से अब एक नया रिश्ता बनायेंगे
 जिस तरह अपनी सासों को सहेज रहे हैं
 उस तरह उसकी सासों को भी बचाएंगे
 अब इन्तजार है उस मौके का
 जब नयी सोच के साथ...,
 पुरानी वाली ज़िंदगी को जी पाएंगे

हार कहाँ हमने मानी है ।

शुधित हैं हम व्यथित हैं
 अपनी जन्मजात गरीबी से
 मदद न करते बस सुन लेते तुम
 छलका देते आँसू हमारी लाचारी पे
 रोषित रहकर हमने भी हँसते चलने को ठानी है
 थके अवश्य है पर हार कहाँ हमने मानी है ।
 हे ईश्वर तेरी रचना का
 हम भी अभिन्न भाग हैं
 घुट- घुट कर जीवन जीने को
 फिर हम ही क्यों अभिशप्त है
 कब तक छलेगा और हमें अभी सार नहीं ठानी है
 अकिंचनता में हम हैं पर हार कहाँ हमने मानी है ।
 उम्र गँवा दी हमने पढ़ने में
 और कितना पढ़ने को कहते हो
 कब तक दोगे ढ़ंग की नौकरियाँ
 दोष पूर्ववर्तियों पर क्यों मढ़ते हो
 सीधे - सीधे कह दो भैया इसमें क्या परेशानी है
 अथक परिश्रम कर रहे हैं, हार कहाँ हमने मानी है ।
 मूल्य लेते हो पूरे का कम मापन कर देते हो
 जाना सबका जब निश्चित है
 अनैतिक धन संघय क्यों करते हो
 घृणित कर्म है यह घोर बेईमानी है
 याचक हैं तो भी हार कहाँ हमने मानी है।

थमी-थमी-सी ज़िन्दगी...

थम गई है ज़िन्दगी
 थम-सा गया शहर
 हर कहीं व्याप्त है
 कोरोना का क़हर
 सहमे-सहमे खड़े हैं वृक्ष
 दसों दिशाएं मौन हैं
 सात समन्दर पार से
 आया राक्षस कौन है
 पात-पात सहमा हुआ
 क्यों थम-सी गई हवा
 किसकी यह नज़र लगी
 विश्व को यह क्या हुआ
 दूर होवे यह आपदा
 जल्द सब अनुकूल हो
 नृत्य करें शिव मस्त हो
 हाथों में त्रिशूल हो
 पहले जैसी बहे हवा
 उपवनों में फूल हों
 पहले जैसे खुले हुए
 दफ़्तर बैंक स्कूल हों
 सेवा में लगे हैं जो
 ऋणी है उनका वतन
 उनके इस सत्कर्म को
 शत-शत हमारा नमन



दीपा माथुर
 जयपुर (राजस्थान)
 mdeeparajeev@gmail.com



जय हिन्द सिंह 'हिन्द'
 आजमगढ़, उत्तर प्रदेश
 jaihindingsh2774@gmail.com



डा. सारिका मुकेश
 एसोसिएट प्रोफेसर
 वेब्लेज इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी
 चेन्नै- (तमिलनाडु)
 drsarikamukesh@gmail.com



कोरोना का उद्भव

कोरोना का उद्भव चीन के वुहान ने करवाया था।
देखते ही देखते सारी दुनिया का सिर चकराया था।
वहाँ से फैला कोरोना, इटली, स्पेन, अमेरिका,
हो गया यहाँ से सभी का शुरू रोना।।
हे ! प्रभु तुझसे करते हम गुजारिश।
कोरोना का इलाज कर पूरी कर हमारी फरमाइश।।
लाश ही लाशों का अंबार होता जाता है।
कोरोना की वैक्सिन का पता हमें
अभी तक नहीं आता है।।
कोरोना से बचने का एकमात्र उपाय है, लॉकडाउन।
घर, ऑफिस, स्कूल व सोशल गतिविधियों को
करो कुछ दिन के लिये शटडाउन।।
हाथों को बीस सैकंड तक धोना,
हाथ, चेहरे, नाक, कान पर न लगाने देना
यही ज्ञान है, सबका।
फेस मास्क, वस्त्र उपयोग खोसते,
छींकते वक्त करके सुरक्षित उपाय है, अब का।
कोरोना के कारण घर में बंद होकर
फिर से एक हो गए घर-संसार।
इसी वजह से प्रकृति का प्रदूषण
बहुत हद तक नियंत्रित होकर
याद आये हमें पशु-पक्षियों के प्रति आचार-विचार।।
कविता के अंत में मेरा शुक्रिया है,
पुलिस, डॉक्टर व सफाई कर्मचारियों को...
शत-शत नमन इन कोरोना योद्धाओं को...



हम जीत सकते हैं

न कोई योजना थी
न कोई था उपाय
महामारी टूट पड़ी
हर व्यक्ति हुआ असहाय
इटली, चीन, अमेरिका
या भारत, पाकिस्तान
कोरोना की बीमारी से
हर मुल्क हुआ परेशान
अब बनी योजनायें सारी
अब सारे किये गये जतन
कितनी मौतें हुई किसका दोष
जैसे विष बरसाया हो गगन
हे प्रभु! कृपा करो जग पर
हर प्राणी को सशक्त करो
कोरोना नामक इस दैत्य से
हम सबको भयमुक्त करो।
अब सब जागे है नींद से
अब सबको बात पता चली
उपाय किए तब भारत ने
जनता कर्फ्यू की युक्ति मिली
सब करो समर्थन मोदी जी का
अपने अपने घर में वास करो
बाहर न निकलो तुम मित्रो
जीत कर कोरोना से इतिहास रचो
हम सब साथ देकर ही
इस मुश्किल से जीत सकते है
पोलियो जीता, टीबी जीता
अब कोरोना को मात दे सकते हैं।



बदलाव देखने वाले

सोचता हूँ कमी-कमी
कि बदलाव देखने वाले
देखकर कुछ बदलावों को
हो जाते होंगे व्यथित।

दख्त भरे क्षेत्रों में
देखकर ऊँची-ऊँची इमारतें
व्यथित हो जाना हिय का
बिल्कुल ही स्वाभाविक है।

हुआ करता था जहाँ पर
कमी बहुत ही बड़ा वाला
महुआ का फलदार वृक्ष
चैत-आषाढ़ में जहाँ पर
कमी होती थी बुढ़िया दादी
टपकते महुओं को बहुत ही
आहिस्ता बीनने के लिए
वहाँ खड़ी हैं आज
बहुमजिला इमारतें और
आसपास का पूरा क्षेत्र भी
बना दिया गया है शहर-सा।

दशकों के अनुभवों को
सँजोने वाले वृद्ध-पुरनिया
जब करते होंगे एहसास
चक्षुओं में जलन का
तो आ जाती होगी दया
आने वाली पीढ़ी के लोगों पर।



बैंक कर्मी की जुबानी जिंदगी की कहानी



प्रिया राठौर

जयपुर, राजस्थान
rathore19.priya@gmail.com

जब से हमने कोरोना का नाम सुना है, जब से हम इसे समझने लगे हैं तभी से कई विभाग के कर्मचारियों की वाहवाही सुनने को मिली और इसमें कोई शक भी नहीं की उन सभी ने तारीफ के काबिल काम भी किया है। जिन्हें हमने नाम दिया कोरोना वारियर्स यानि हमारे स्वास्थ्यकर्मी, पुलिसकर्मी, समाजसेवक आदि, पर इन सब में एक और विभाग भी ऐसा है जो खुद के जीवन को जोखिम में डालकर भी लगातार सेवाएँ दे रहा है। जब सम्पूर्ण देश में लॉकडाउन यानी तालाबंदी थी तब भी इस विभाग के कर्मचारियों ने हर दिन काम किया है। हम बात कर रहे हैं बैंकिंग और बैंकर्स की। एक ऐसा क्षेत्र जिसने ऐसी विपरीत परिस्थितियों में भी काम किया है पर उसका जिक्र ना तो किसी अखबार ने किया न ही किसी न्यूज़ चैनल ने। किसी भी जुबां पर इसका जिक्र तक नहीं था। मैं खुद इस बारे में इसलिए लिख पा रही हूँ क्योंकि मैं एक बैंककर्मी हूँ। जब आप सब घर पर बैठकर कोरोना से सतर्कता बरत रहे थे तब हम बैंक जाकर आपके लिए काम कर रहे थे। जहाँ एक तरफ स्वास्थ्यकर्मी, पुलिसकर्मी को ऐसे वक्त में काम करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है वहीं बैंककर्मी को ऐसा कोई प्रशिक्षण नहीं दिया जाता। जहाँ हेल्थ वर्कर्स और पुलिसकर्मीयों के परिवार का ध्यान रखते हुए उनके लिए क्वारंटीन सेंटर बनाये गए वहीं दूसरी तरफ बैंककर्मीयों के लिए ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी जैसे की उनके परिवार का कोई महत्व ही नहीं जैसे की खुद बैंककर्मीयों का कोई महत्व ही नहीं। सौतेलापन जैसे कुरीब से महसूस किया हो हम सब ने, पर दर्द को जुबान नहीं मिली और हम यूँ ही भटकते रह गए। ना किसी ने हमें पूछा और ना ही किसी को हम याद रहे। हम हर दिन कितने ही लोगों के छुए हुए नोट, कागज़, दस्तावेज को छूते हैं और बीमारी जब छूने से फैलती हो तो ऐसे में मन में डर का घर कर लेना जायज़ है।

ये डर सिर्फ हमारे चेहरे पर ही नहीं बल्कि बैंक में आने वाले कई ग्राहकों के चेहरे पर भी था लेकिन कुछ लोग ऐसे भी थे जिनके माथे पर कोरोना की चिंता की लकीर खींची ही नहीं थी। मैं आपको एक किस्सा बताती हूँ “ तकरीबन 70 वर्ष की आयु के एक बुजुर्ग मात्र 100 रुपये निकलने के लिए बैंक आये। अगले ही दिन ये बुजुर्ग फिर से 100 रुपये निकालने आये। हमने इन्हें समझाना चाहा कि आप रोज-रोज बैंक आने की बजाय एक ही दिन में पैसे निकाल लें तो इस पर इनका जवाब था कि ऐसा करने से उन्हें 100 रुपये पर एक दिन का ब्याज का नुकसान होगा तो जहाँ उन्हें उम्र का ध्यान रखते हुए घर में रहना चाइये था वहाँ उन्हें ब्याज की चिंता सता रही थी”...एक और किस्सा साझा करती हूँ - “एक महिला बैंक आती है और अपने खाते से सारे पैसे निकलवा लेती है क्योंकि उसे लगता है जीरो बैलेंस वाले खातों में सरकार पैसे डालेगी। बैंक जो कि एक सार्वजनिक स्थान है वहाँ कतार में खड़े लोगों को जब सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए दूर-दूर खड़े होने को कहा गया तो एक सज्जन से जवाब मिला - ‘साहब जिसको होना होगा उसको कोरोना होके ही रहेगा चाहे कितना ही बच लो’”

कुछ लोग बैंक में प्रवेश करते हुए मास्क पहनते हैं सिर्फ इसलिए क्योंकि बिना मास्क पहने बैंक में अंदर आने की इजाजत नहीं है। ऐसे में बैंककर्मीयों और ग्राहकों दोनों के लिए ही खतरा बढ़ जाता है। ऐसे वृष्ट में सबसे ज्यादा ज़रूरी है खुद को सकारात्मक बनाये रखना। डर कर बैठने की बजाय डटकर लड़ना। वैसे भी मंजिल बड़ी हो तो दिल छोटा नहीं रखते। जैसे हम मंत्रालय की जारी की हुई गाइडलाइन्स को फॉलो करते हैं वैसे ही कुछ गाइडलाइन्स हमें हमारी सोच को सकारात्मक बनाने के लिए सेट करनी चाहिये। जैसे कि हम खुद को ज्यादा से ज्यादा अगर व्यस्त रखें तो हमें अनावश्यक बातें सोचने का वृष्ट ही नहीं मिलेगा। आपकी जो भी अभिरुचि है उसके लिए समय निकालें चाहे वो पेंटिंग करना हो या डांस करना, किताबें पढ़ना हो या खाना बनाना। यूँ मानिये कि यह एक दौर है

जिसमें आप स्वयं को टेस्ट कर सकते हैं कि जीवन में विपरीत परिस्थितियों में आप खुदको सँभालने के कितना काबिल हो। दुनिया में वही शख्स काबिल माना जाता है जो हवाओं का रुख बदलने की काबिलियत रखता हो। आपको कोई तब तक नहीं हरा सकता जब तक की आप खुद न हार मान लो। कहा भी तो गया है “मन के हारे हार है और मन के जीते जीत” तो ऐसे वक्त में ज़रूरी हो जाता अपने अंदर किसी तरह की कोई ऐसी आबो हवा ना जाने दें जो आपको अंदर से अशुद्ध कर दे बल्कि ऐसी हवा में सांस लीजिये की दिमाग में अगर कोई बात आये तो सिर्फ और सिर्फ सकारात्मकता की तरफ इशारा करती नज़र आये। आज के वक्त में जब हमारा जीवन पूरी तरह से डिजिटल गैजेट्स पर निर्भर है आपको थोड़ी सी इनसे दूरी बनाके खुद से नजदीकियाँ बढ़ानी चाहिए क्योंकि हम दुनिया जहाँ से तो मिल लेते हैं पर खुद से मिलना भूल जाते हैं तो ऐसे में यह काफी सही वक्त है खुद से एक हसीं मुलाकात करने का, खुद को करीब से जानने का। हम जो सोचते हैं अक्सर वही हमारे जीवन में घटित हो जाता है जैसे किसी दिन आप सोचेंगे आज का तो दिन ही ख़राब है तो वो दिन ख़राब ही लगेगा पर अगर आप ये सोच लें दिन इतना तो बुरा नहीं है तो आपको उस दिन में कई अच्छी बातें नज़र आएंगी। ये सब हमारी सोच पर निर्भर करता है कि हमारे साथ क्या होना है हम निराशावाद की तरफ जाने वाले हैं या आशावाद की तरफ। तो बस अपनी सोचने की क्षमता पर काबू पाना सीख जाइये ताकि कोरोना की इस समय में बेमतलब की बातें दिमाग में न आएँ और आप खुद की जिन्दगी का आनंद ले सकें। जब अब तक खुद को बचाया है तो आगे भी बचायेंगे, हम सब मिलकर इस कोरोना को हरायेंगे।

नरेश कुमार शाद लिखते हैं -

इतना भी ना- उम्मीद दिल - ए - कम -
नज़र न हो मुमकिन नहीं कि शाम - ए -
अलम की सहर न हो

ईश्वर - जीवन का अंतिम सत्य व अंतिम लक्ष्य...



अजय शर्मा

शिक्षक
(सहयोग संस्था)
editormahisandesh@gmail.com

परमात्मा- ईश्वर- गॉड- परमशक्ति- अल्लह-
वाहे गुरु

एक ऐसा सत्य जिसे विवेक शक्ति युक्त योनि
में जान लेना अति आवश्यक !

परंतु एक कटु सत्य कि जितना जानना अति
आवश्यक, उतना ही घोर अंधविश्वासों,
छल, कपट, धूर्तता, धोखा, महा-स्वार्थ,
अति कामुकता, झूठ की चरम सीमा से घिरा
हुआ।

इन दिनों तीन कार्यों की बड़ी इज्जत है ! हर
इंसान साधारण पृष्ठभूमि से हो, मध्यमवर्गीय या
उच्चवर्गीय हो; तीन वस्तुओं से अपने
सामाजिक मान प्रतिष्ठा का आंकलन करता है !

- (1) बच्चे किस पब्लिक स्कूल में पढ़ रहे हैं?
- (2) किस डॉक्टर का इलाज चल रहा है?
- (3) सबसे महत्वपूर्ण अंतिम वस्तु- किस
गुरु महाराज के शिष्य है तथा जिन गुरु के
शिष्य है; उन गुरु के कहां-कहां आश्रम है?

अध्यात्म के क्षेत्र में, ईश प्राप्ति के मार्ग में
इससे बड़ी विडंबना क्या होगी, इससे ज्यादा
इस क्षेत्र का पतन क्या होगा कि जो रास्ता
शुरू ही वहां से होता है जहां सब कुछ छोड़
दिया जाता है !

वहीं उच्च अवस्था वहां से मानी जा रही है
जहां संग्रह की पराकाष्ठा है !



आज गुरु की निर्लिप्तता से नहीं बल्कि
उसकी संलिप्तता से उनके महान होने की
पहचान हो रही है ! गुरु की महानता उसके
ज्ञान व आचरण से नहीं बल्कि शिष्यों की
संख्या, उनके ठहरने, खाने-पीने का
इंतजाम, आवागमन की लगजरी व्यवस्था
तथा विभिन्न शहरों में स्थापित उनके
वातानुकूलित आश्रमों की संख्या से हो रही है !

**क्या हम सच में ही परम शक्ति से
जुड़ना चाहते हैं? नहीं!**

हम केवल दिखावा चाहते हैं ! हमें शॉर्टकट
चाहिए ! हमें एक ऐसा एजेंट चाहिए जो हमें
बिना हमारी आदतों को (छल-कपट,
बेईमानी, रिश्ततखोरी, कामुकता, क्रोध)
छुड़ाए, केवल हमारी चापलूसी एवं हमारी

दान दक्षिणा के सहारे हमें उस परमशक्ति से
मिला दे ! हम इस जीवन को भी निरंकुशता,
अश्लीलता के साथ आनंदमय उपभोग कर
लें और आगे की यात्रा को हमारा एजेंट
सुखमय बना दे !

इसी सोच का परिणाम है- हमारे गुरुओं की
भव्य श्रंखला, भव्य आश्रम, नित नए तांत्रिक
प्रयोग !

सोचो परमशक्ति क्या इतनी अबोध
है..... जागो !

क्या करोड़ों ब्रह्मांड का रचयिता हमारे
शॉर्टकट अपनाने एवं अन्य क्रियाकलापों से
अनजान है?

फिर हम धोखा दे रहे हैं या स्वयं के साथ
धोखा कर रहे हैं??

यस सोसायटी ने की जरूरतमंदों की सहायता

माही संदेश/ आगरा रोड पर पैदल जा रहे यात्रियों को यस सोसाइटी की टीम द्वारा प्रवासी श्रमिकों को भोजन पैकेट, अल्पाहार व पेयजल का वितरण, जूते-चप्पल की व्यवस्था, विश्राम की व्यवस्था, एवं प्रशासन से आग्रह पर बस की व्यवस्था करके उनके गाँव पहुँचाने की व्यवस्था की गई। यस सोसायटी के अध्यक्ष आशीष सराफ ने बताया कि समाज सेवा का यह कार्य संरक्षक विधायक कालीचरण सराफ के मार्गदर्शन में किया गया। हम लोगों ने जब देखा कि यह लोग पैदल ही भरी धूप के अंदर अपने घरों की ओर जा रहे हैं तो हमारी टीम ने यह निर्णय लिया हम लोग इनको सड़क पर जाकर सूखा खाना जैसे बिस्किट नमकीन चॉकलेट वितरित करेंगे हमारा यह निर्णय कारगर सिद्ध हुआ और हमने सैकड़ों यात्रियों को यह सूखी खाद्य सामग्री प्रदान दी। इस दौरान यस सोसाइटी के रोहित अजमेरा, ललित भारद्वाज कार्यकर्ता खलेश कुमावत अक्षत जैन, हिमांशु जैन, सत्यनारायण साहू, तपन गुप्ता भी मौजूद थे।



उम्मीद बंधाते रहिये



ममता पंडित

सह-संपादक

माही संदेश

pandit.mamta@gmail.com

दृश्य एक

हम बहुत अच्छे दोस्त थे। हमने कई धारावाहिकों में साथ काम किया था, बहुत अच्छे वक्त बिताया था साथ में।

आखिरी सवाल पिछली बार कब बात हुई थी।

दो साल पहले

दृश्य 2

छह महीने पहले ही हमारी बात हुई थी। सब कुछ ठीक था।

दृश्य 3

मुझे अफसोस है कि मैं अपने दोस्त का आखिरी फोन नहीं उठा पाया।

आप समझ गए होंगे इन दृश्यों के जरिये में किसकी बात कर रही हूँ। जाने वाला चला गया अब ये पश्चाताप, ग्लानि और माफी सब बेमानी है। लेकिन वो जाते हुए हमारे लिए कई सवाल छोड़ गया है जिसके जवाब हमें ढूँढने होंगे।

अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत ने 14 जून को अपने घर में आत्महत्या कर ली थी। इतने काबिल, प्रतिभाशाली और मेहनती कलाकार के यूँ चले जाने से सिर्फ फिल्म इंडस्ट्री ही नहीं उनके सभी चाहने वाले सदमे में हैं। उनकी प्रसिद्धि और लोकप्रियता का अंदाजा आप इस बात से लगा सकते हैं कि अपनी मौत के पांच दिन बाद तक भी सोशल मीडिया साइट ट्विटर पर ट्रेंड कर रहे थे।

इस एक आत्महत्या से कई सच सामने आये हैं। फिल्म इंडस्ट्री में नई प्रतिभाओं के साथ हो रहे भेदभाव का सच, इतनी चमक धमक वाली दुनिया के अनदेखे अंधेरो का सच और लाखों की तादाद में प्रशंसकों के बावजूद भीतर के अकेलेपन का सच।

इस सभी मसलों पर अब एक नई बहस शुरू हो चुकी है। इस लेख में हम बात करेंगे उन परिस्थितियों और वजहों के बारे में जिनके चलते इंसान इतना बड़ा कदम उठाने पर मजबूर हो जाता है।

फिल्मी दुनिया बाहर से जितनी चमकीली नज़र आती है अंदर से उतनी उन्हीं खाली

और खोखली है। दिन रात कैमरे के सामने मुस्कराते इन चेहरों के पीछे छुपे दर्द किसी तस्वीर में कैद नहीं हो पाते। अगर ये उदासी किसी तस्वीर में कैद ही भी जाए तो वो तस्वीर छपती नहीं, कहीं छुपा दी जाती है। बाध्य होते हैं ये सितारे एक झूठी जिंदगी जीने के लिए।

निश्चित ही कुछ विकट और विषम परिस्थियाँ रहीं होंगी जिसके चलते सुशांत ने यह कदम उठाया होगा। हो सकता है जैसा कहा जा रहा है इंडस्ट्री के कुछ लोग उनके खिलाफ एकजुट भी हो गए हों। लेकिन फिर भी मेरा मानना है कि इस घटना के बाद उनके अपनों को खुद से ये सवाल पूछना चाहिए कि क्यो इतना जिंदादिल इंसान उनसे अपना

किसी अजनबी को अपना किस्सा सुनाकर या कहीं अपने दिल की बात लिखकर अपना मन हल्का कर सकते हैं। जरूरी यह है कि जो कुछ आपके भीतर आपको परेशान कर रहा है उस विचार के बाहर आने की। एक बार आपने उस समस्या को छुपाने या उससे भागने के बजाए अगर उसका सामना कर लिया तो हल जल्द ही निकल जायेगा।

साथ ही यह भी जरूरी है कि हम अपने आसपास अपने करीबियों से जुड़े रहे, मिलते रहे, बातें करते रहें। हमें जीवन में अपनी प्राथमिकताएं निश्चित करनी होंगी और जरूरी है कि परिवार और दोस्त हमारे काम की वजह से हम से दूर ना चले जाएं।



दुःख नहीं बांट पाया। क्यो खुद को उनका करीबी बताने वाले लोगों ने दो साल या छह महीने तक उनसे हाल-चाल नहीं पूछा। क्यो उनका करीबी दोस्त एक कॉल मिस होने के बाद उन्हें फिर से कॉल नहीं कर पाया। ये सुशांत के दुश्मनों की जीत नहीं उनके दोस्तों की हार है।

इस तरह की घटना से हमें सबक लेना होगा। तनाव या अवसाद जैसी मानसिक बीमारियों पर खुल कर बात करनी होगी। हमें ये समझना होगा कि हमारे आसपास कम से कम कुछ लोग ऐसे होने चाहिए जिनसे हम खुल कर दिल की बात कर सकें, उनके सामने हमें चेहरे पर किसी मुछौटे की जरूरत न हो। वो इंसान कोई भी हो सकता है, दोस्त, रिश्तेदार या और कोई करीबी। मानसिक बीमारियों के विशेषज्ञ कहते हैं कि गर कोई नहीं है तो आप

क्योकि किसी व्यक्ति के चले जाने के बाद यह कोई याद नहीं रखता कि अपने ऑफिस में कितना कार्यकुशल था पर यह जरूर याद रखा जाएगा कि वह कितना अच्छा इंसान था। कोशिश कीजिए अपनों के साथ समय बिताने की, उन्हें अपने वक्त का कीमती तोहफा देने की, अपने करीबियों को ये एहसास दिलाते रहें कि व्यस्तता के बावजूद आपको उनकी फिक्र है, और वही आपकी प्राथमिकता है। आपके दोस्तों को आप पर इतना भरोसा होना चाहिए कि चाहे जो परिस्थिति हो आप उनके साथ हैं और रहेंगे। डूबते को तिनके का सहारा काफी होता है, और एक छोटा सा दीपक भी अंधेरी राह को रोशन कर देता है। उम्मीद रखिये और उम्मीद बंधाते रहिये। इसी पर दुनिया कायम है।

‘ये रातें नयी पुरानी’ रीता भादुड़ी



शिशिर कृष्ण शर्मा

फिल्म इतिहासकार
9821394486

रीता भादुड़ी का निधन! 17 जुलाई 2018 की सुबह कम्प्यूटर ऑन करते ही फेसबुक पर नज़र आयी ये ख़बर किसी झटके से कम नहीं थी। अचानक क्या हुआ उन्हें? अभी तो उम्र नहीं थी जाने की? एकबारगी तो इस ख़बर पर यकीन ही नहीं हुआ। उनके करीबी लोगों से संपर्क किया तो दुर्भाग्य से ये ख़बर सही निकली। पता चला कि उन्हें कई सालों से डायबिटीज़ थी जिससे उनकी किडनियां ख़राब हो गयी थीं। और अब पिछले कुछ दिनों से वो आई.सी.यू. में भर्ती थीं।

रीता जी से मेरी मुलाकात साल 2003-04 में दूरदर्शन के धारावाहिक ‘शिकवा’ के सेट पर पारिवारिक मित्र अलका आश्लेषा जी के ज़रिये हुई थी। अलका जी भी इस धारावाहिक में एक अहम किरदार निभा रही थीं। निर्माता-निर्देशक राकेश चौधरी के इस धारावाहिक की शूटिंग अंधेरी (पश्चिम) के मिहलतनगर इलाके में स्थित पार्श्वगायिका हेमलता के बंगले में होती थी। उल्लेखनीय है कि ब्लॉग ‘बीते हुए दिन’ की संस्थापक सदस्या और मूल हिन्दी पोस्ट्स की अंग्रेज़ी अनुवादिका अक्षर अपूर्वा इन्हीं अलका आश्लेषा जी की बेटी हैं।

रीता भादुड़ी के पिता श्री रमेशचंद्र भादुड़ी तत्कालीन अंग्रेज़ी सरकार में जागीरों के कमिश्नर थे और नौकरी के सिलसिले में उनका अधिकांश समय मध्य भारत की विभिन्न रियासतों में गुज़रता था। लेकिन एक समय ऐसा आया कि स्थायित्व के लिए उन्हें इंदौर शहर में बस जाना पड़ा। रीता जी का जन्म 11 जनवरी 1950 को इंदौर में हुआ था। 3 बहनों और 1 भाई में वो सबसे छोटी थीं। बातचीत के दौरान रीता ने बताया था, ‘1950 के दशक के मध्य में हम लोग मुम्बई घूमने आए। ये शहर हमें इतना पसंद आया कि 1957 में इंदौर छोड़कर हम मुम्बई शिफ़्ट हो गए। उस वक्त मेरी उम्र 7 साल थी। मुम्बई आने पर मेरी मां चंद्रिमा भादुड़ी को हिन्दी पत्रिका ‘नवनीत’ में उपसम्पादिका की नौकरी मिल गयी। मुम्बई में बसे बंगाली परिवारों से संपर्क हुआ तो हम लोग दुर्गापूजा के दौरान होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी बढ़चढ़कर हिस्सा लेने लगे। ऐसे ही एक कार्यक्रम के दौरान हुए नाटक में उस ज़माने के मशहूर निर्देशकों नितिन बोस और बिमल रॉय ने मेरी मां को अभिनय करते देखा तो उन्हें अपनी फिल्मों क्रमशः ‘नर्तकी’ और

‘बंदिनी’ में ले लिया। ये दोनों ही फिल्में 1963 में रिलीज़ हुई थीं। फिल्म ‘बंदिनी’ में जेल वार्डन के किरदार से मां को पहचान मिली और वो फिल्मों में व्यस्त होती चली गयीं। आगे चलकर उन्होंने ‘तीसरा कौन’, ‘रिश्ते-नाते’, ‘शराफत’, ‘सावन भादों’, ‘नन्ही कलियां’, ‘लाल पत्थर’ और ‘आनंद आश्रम’ जैसी करीब 30 फिल्मों में काम किया।



मां चंद्रिमा भादुड़ी की ही तरह रीता भादुड़ी का भी रूझान अभिनय की तरफ़ था। वो कॉलेज के ज़माने से ही नाटकों में काम करती आ रही थीं। साल 1971 में उन्होंने फिल्म इंस्टिट्यूट, पुणे में दाखिला ले लिया जहां पार्श्वगायक शैलेन्द्र सिंह, शबाना आजमी और कंवलजीत जैसे कलाकार उनके बैचमेट थे। दो साल का कोर्स पूरा करके रीता भादुड़ी पासआउट हुईं तो जो पहली फिल्म उन्हें मिली, वो थी ‘आईना’। इस फिल्म के निर्देशक के.बालाचंद्र और हीरो-हिरोईन राजेश खन्ना और मुमताज़ थे। संगीत नौशाद का। ये फिल्म 1974 में बनी थी।

उन्हीं दिनों फिल्म इंस्टिट्यूट के अपने एक बैचमेट मोहन शर्मा के ज़रिये रीता भादुड़ी की मुलाकात साउथ के जाने-माने निर्देशक सेतुमाधवन से हुई। उन्होंने रीता भादुड़ी को अपनी मलयालम फिल्म ‘कन्याकुमारी’ की मुख्य भूमिका के लिए चुन लिया। इस फिल्म में रीता

भादुड़ी के हीरो कमलहासन थे। इसके बाद जब सेतुमाधवन ने अपनी मलयाली फिल्म ‘चट्टकारी’ पर हिन्दी में ‘जूली’ बनाई तो उसकी एक अहम भूमिका रीता भादुड़ी को ऑफर की। रीता जी का कहना था, ‘फिल्म ‘जूली’ और इसका संगीत सुपरहिट हुए। इस फिल्म का गाना ‘ये रातें नयी पुरानी, कहती हैं कोई कहानी’ मुझ पर फिल्माया गया था। लेकिन ‘जूली’ में मैंने बहन की भूमिका क्या की कि कैरेक्टर आर्टिस्ट ही बनकर रह गयी। ‘उधार का सिन्दूर’, ‘प्रतिमा और पायल’, ‘अनुरोध’ जैसी कुछ फिल्मों में मैंने कैरेक्टर रोल्स किये। लेकिन अचानक ही कुछ ऐसा हुआ कि मैं गुजराती फिल्मों की टॉप की हिरोईन बन गयी।’

दरअसल अपने बैचमेट परेश मेहता के ज़रिये रीता जी की मुलाकात गुजराती सिनेमा की जानी-मानी हस्तियों दिगंत ओझा और निरंजन मेहता से हुई जिन्होंने रीता जी को अपनी गुजराती फिल्म ‘लाखों फूलाणी’ में हिरोईन की भूमिका में साईन कर लिया। 1976 में रिलीज़ हुई ये फिल्म सुपरहिट हुई और रीता भादुड़ी गुजराती फिल्मों में व्यस्त होते-होते टॉप पर पहुँच गयीं। रीता जी के अनुसार गुजराती फिल्मों में उनकी ये व्यस्तता लगातार 8 सालों तक बनी रही। हालात यहां तक पहुँच गए कि उन्हें वडोदरा में ही बस जाना पड़ा। उस दौर में बनी ‘कुलवधू’, ‘दीकरी’ अने गाय दोरे आ त्यां जाय’, ‘काशीनो दीकरो’, ‘दियर भोजार्ज’, ‘अखंड चूड़लो’, ‘जाग्या त्यांथी सवार’, ‘गरवी नार गुजरातण’, ‘अलख निरंजन’, ‘जुगल जोड़ी’, ‘पीठी पीली ने रंग रातो’, ‘साचुं सुख सासरियामां’, ‘कंकुनी किंमत’, ‘माना आसुं’, ‘मा मने सांभरे छे’ जैसी उनकी ज़्यादातर गुजराती फिल्में हिट रहीं।

रीता भादुड़ी का कहना था, ‘तमाम व्यस्तताओं के बीच मेरे करियर ने अचानक ही एक नया मोड़ ले लिया। साल 1984 में निर्माता-निर्देशक राकेश चौधरी वडोदरा आकर मुझसे मिले। टी.वी. धारावाहिकों का दौर उस वक्त अपने शुरुआती चरण में था। राकेश चौधरी ने मुझे दूरदर्शन धारावाहिक ‘बनते-बिगड़ते’ की एक अहम भूमिका ऑफर की। इस धारावाहिक से मैंने छोटे परदे पर एंटी ली और फिर इस क्षेत्र में भी व्यस्त होती चली गयी।’

रीता भादुड़ी ने ‘खानदान’, ‘मुजरिम हाज़िर’, ‘तारा’, ‘कुमकुम’, ‘संजीवनी’, ‘हद कर दी’, ‘एक महल हो सपनों का’, ‘भागवाली’, ‘एक नयी पहचान’ जैसे बेशुमार टी.वी. धारावाहिकों में काम किया और इस तरह वो हर घर में एक जाना-पहचाना चेहरा बन गयीं। निधन के समय भी उनका धारावाहिक ‘निमकी मुखिया’ ‘स्टार भारत’ चैनल पर ऑन एयर था, जिसमें वो दादी की भूमिका निभा रही थीं। टी.वी. के साथ साथ वो ‘युद्धपथ’, ‘बेटा’, ‘आतंक ही आतंक’,

‘घरजमाई’, ‘रंग’, ‘कभी हां कभी ना’, ‘राजा’ और ‘विरासत’ जैसी फिल्में भी करती रहीं।

रीता भादुड़ी के बारे में एक आम धारणा ये है कि वो जया भादुड़ी की बहन हैं। लेकिन ये बात बिल्कुल ग़लत है। हकीकत में अभिनेत्री रीता भादुड़ी का जया से कोई भी रिश्ता नहीं है। दरअसल जया भादुड़ी की बहन का नाम भी रीता है लेकिन वो एक अलग शख्सियत हैं। उनके पति अर्थात जया के बहनोई राजीव वर्मा एक जाने माने चरित्र अभिनेता हैं। जबकि स्वर्गीय अभिनेत्री रीता भादुड़ी अविवाहित थीं। इंटरनेट पर दी गयी जानकारी की सदिग्धता और अविश्वसनीयता का ज्वलंत उदाहरण स्वर्गीय अभिनेत्री रीता भादुड़ी के नाम का विकिपीडिया पेज है जिसमें उनके बेटों के नाम (शिलादित्य वर्मा और तथागत वर्मा) तक दे दिए गए हैं। जाहिर है ये दोनों नाम अभिनेता राजीव वर्मा और उनकी पत्नी रीता भादुड़ी (जया की बहन) के बेटों के हैं।

रीता जी उन कलाकारों में से थीं जिनका इंटरव्यू मैंने साप्ताहिक ‘सहारा समय’ के अपने कॉलम ‘क्या भूलूँ क्या याद करूँ’ के लिए करीब 14-15 साल पहले किया था। ब्लॉग ‘बीते हुए दिन’ की विश्वसनीयता को बनाए रखने के लिए उस समय के इंटरव्यूज को पोस्ट करने से पहले सम्बंधित कलाकारों अथवा उनके परिवार के सदस्यों से संपर्क करके अपडेट्स जरूर ली जाती हैं। इस सूची में रिटायर हो चुके उम्रदराज कलाकारों को प्राथमिकता पर रखा जाता है। ऐसे में रीता जी जैसे अपेक्षाकृत युवा और अभी भी सक्रिय कलाकारों का फ़िलहाल पीछे रह जाना स्वाभाविक ही है।

दरअसल वो मेरे लेखन का शुरूआती दौर था और अनुभवहीनता की वजह से तब मैं जन्मतिथि, जन्मस्थान, परिवार जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर रीता जी से सवाल ही नहीं कर पाया था। रीता जी के निधन की आकस्मिक सूचना से लगे झटके की एक वजह ये भी थी। उनके परिवार के बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं थी। ऐसे में अपडेट्स के लिए बात करता भी तो किससे? उधर इंटरनेट पर दी गयी जानकारी सिरे से ग़लत थी। रीता जी के अनुसार 1957 में जब वो लोग मुम्बई शिफ्ट हुए तो उनकी उम्र 7 साल थी। इस हिसाब से तो उनका जन्म 1950 या 51 का होना चाहिए था। लेकिन विकिपीडिया समेत तमाम साइट्स उनकी जन्मतिथि 4 नवम्बर 1955 दिखा रही थीं। उनके जन्मस्थान को लेकर भी मेरे मन में संशय था क्योंकि जो कुछ रीता जी ने बताया था, उसके अनुसार उनका जन्म इंदौर का होना चाहिए था। जबकि विकिपीडिया पर लखनऊ नजर आ रहा था। ऐसे में अलका आश्लेषा जी ने रीता जी की बहन रूमा भादुड़ी से बात करने की सलाह दी। रूमा जी भी अभिनेत्री थीं और कुछ धारावाहिकों में काम कर चुकी थीं।

रूमा जी का फ़ोन नंबर न तो अलका जी के पास था और न ही फिल्म डायरेक्टरी में। ऐसे में हमेशा की तरह एक बार फिर से ‘सिने एंड टी.वी.आर्टिस्ट एसोसिएशन - सिंटा’ का सहारा मिला। सिंटा कार्यालय में कार्यरत सुश्री श्वेता आयरने ने बताया कि सिंटा के रिकार्ड्स में रीता भादुड़ी की जन्मतिथि 1 नवम्बर 1951 दर्ज है। साथ ही उन्होंने रूमा भादुड़ी का फ़ोन नंबर भी दिया हालांकि श्वेता के अनुसार उस फ़ोन नंबर के आगे क्रॉस का निशान लगा हुआ था। सिंटा कार्यालय में 24 सालों से कार्यरत वरिष्ठतम कर्मी अनिल गायकवाड़ से उस क्रॉस की वजह पूछी गयी तो पता चला रूमा जी का तो कई साल पहले निधन हो चुका है। यानि अपडेट्स लेने के तमाम रास्ते बंद हो चुके थे। तभी एकाएक शुभुदा का ख़्याल आया। शुभुदा यानि शुभंकर घोष। 1994



की 3 राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फिल्म ‘वो छोकरा’ के निर्देशक। मशहूर पटकथा लेखक और बांग्ला साहित्यकार (स्व.) श्री नबेंदु घोष के बेटे, जिनका प्रचलित नाम ‘शुभु’ है और जो हम लोगों के लिए बड़े भाई यानि दादा हैं डूक यानि ‘शुभुदा’ ! शुभुदा से बात हुई तो उन्होंने रीता भादुड़ी के परिवार के बारे में न सिर्फ़ पूरी जानकारी दी बल्कि उनकी बड़ी बहन और भाई के फ़ोन नंबर भी दे दिए। रीता जी की सबसे बड़ी बहन का नाम राका मुकजी है। राका जी के पति बरून मुकजी एक जाने माने कैमरामैन हैं जिनके नाम ‘चक्र’ और ‘गहराई’ से लेकर ‘बागवान’ और ‘बाबुल’ तक जैसी फिल्में दर्ज हैं।

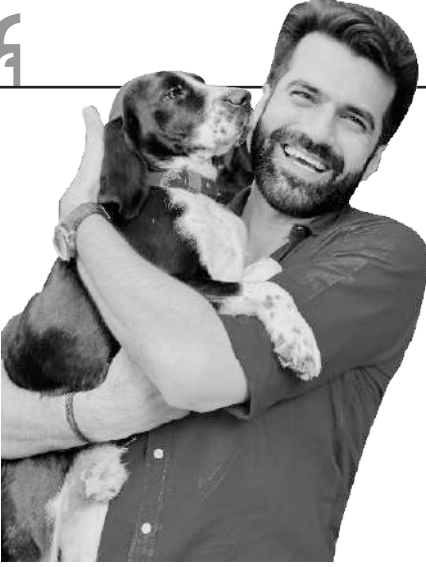
राका जी से छोटी रूमा (भादुड़ी) सेनगुप्ता लम्बे समय तक टाइम्स ऑफ़ इंडिया और धर्मयुग जैसी पत्र-पत्रिका में बतौर उपसम्पादिका काम करती रहीं। वो एक अभिनेत्री भी थीं। उन्होंने साल 1971 में बनी फिल्म ‘नन्ही कलिया’ में अभिनय किया था। करीब 30 साल बाद वो धारावाहिक ‘कहीं किसी रोज़’ में नजर आयीं। 2010 में बनी फिल्म ‘न घर के न घाट के’ में उन्होंने दादी की भूमिका की थी। रूमा जी के पति शंकर सेनगुप्ता एक एडिजेंसी में काम करते थे। 12 जुलाई 2013 को रूमा जी का निधन होने के बाद वो कोलकाता चले गए और अब वहीं रहते हैं।

रूमा जी से छोटे रणदेव भादुड़ी गुजराती फिल्मों

के जानेमाने कैमरामैन हैं और वडोदरा में रहते हैं। रीता भादुड़ी इन सबसे छोटी थीं। रणदेव भादुड़ी जी की पत्नी यानि रीता जी की भाभी श्रीमती तंद्रा भादुड़ी से बात हुई तो उन्होंने बताया, रीता भादुड़ी का जन्म 11 जनवरी 1950 को इंदौर में हुआ था। अर्थात रीता जी के विकिपीडिया पेज पर दी गयी तमाम जानकारी के साथ साथ उनकी ‘सिंटा’ के रिकार्ड में दर्ज जन्मतिथि भी ग़लत थी। श्रीमती तंद्रा भादुड़ी से ये भी पता चला कि उनकी सास अर्थात अभिनेत्री चंद्रिमा भादुड़ी का निधन 6 जून 1997 को हुआ था। जबकि ससुर यानि रीता जी के पिता 1980 में ही गुजर चुके थे।

रीता भादुड़ी की गुजराती फिल्मों की जानकारी हासिल करने के लिए भी अब सिर्फ़ इंटरनेट का ही सहारा था। ‘इन्डियन मूवीज़ डेटाबेस-आई.एम.डी.बी.’ में उनकी कुछ गुजराती फिल्मों के नाम मिल भी गए। लेकिन अब समस्या थी कि उनकी पुष्टि कैसे की जाए क्योंकि इंटरनेट की असलियत तो सामने आ ही चुकी थी। उन नामों को सही गुजराती उच्चारण के साथ हिन्दी/देवनागरी में लिखना भी हमारे लिए आसान नहीं था। ऐसे में गुजराती के मशहूर लेखक-अनुवादक-ब्लॉगर, वडोदरा स्थित श्री बीरन कोठारी मदद के लिए आगे आए। फ़ोन पर लम्बी बातचीत के दौरान उन्होंने हमारा मार्गदर्शन करते हुए रीता भादुड़ी की गुजराती फिल्मों से जुड़ी तमाम समस्याएं सुलझा दीं।

इंटरव्यू के बाद भी रीता जी से ‘सिंटा’ की सालाना मीटिंगों में 4-5 बार मुलाकात हुई और वो हर बार बेहद आत्मीयता से मिलीं। लेकिन जैसे जैसे लेखन की व्यस्तताएं बढ़ती गयीं, बाहर निकलना और लोगों से मिलना जुलना कम होता चला गया। और फिर अचानक ये खबर! डेढ़ दशक पुराने इंटरव्यू को अपडेट करने की इस प्रक्रिया में मुझे 15 दिनों से भी ज्यादा का समय लगा। इस कार्य में सुश्री अलका आश्लेषा, ‘सिंटा’ कार्यालय में कार्यरत सुश्री श्वेता आयरने और अनिल गायकवाड़, निर्देशक शुभंकर घोष (शुभुदा), श्रीमती तंद्रा भादुड़ी और गुजराती लेखक बीरन कोठारी जी से मिले सहयोग के लिए ब्लॉग ‘बीते हुए दिन’ उनका आभार प्रकट करता है। जहां तक प्रश्न है श्री अनिल गायकवाड़ का, तो ये कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा कि वो ‘सहारा समय’ के कॉलम ‘क्या भूलूँ क्या याद करूँ’ के समय से ही लगातार मेरी ताकत बने हुए हैं। जब भी जरूरत हुई, वो ‘सिंटा’ की आलमारियों में बंद बरसों पुराने रजिस्ट्रों में से तलाशकर भूलोबिसरे बुजुर्ग कलाकारों के नाम, फ़ोन नंबर और घर का पता समेत तमाम सूचनाएं मुझे देते रहे, कलाकारों के नाम सुझाते रहे। उनका ये सहयोगपूर्ण रवैया आज भी जारी है, जिसके लिए ‘धन्यवाद’ शब्द भी बहुत छोटा पड़ता है।



बेजुबान जानवरों के लिए भगवान से कम नहीं हैं वीरेन शर्मा

रोहित कृष्ण नंदन

यूँ तो वीरेन हर शनिवार सैकड़ों मासूम श्वानों व जानवरों के लिए अपनी टीम के साथ भोजन खिलाने नियमित जाते रहते हैं लेकिन जब से लॉकडाउन हुआ तब से यह मुहिम प्रतिदिन जारी है और अब तक तकरीबन 80000 से अधिक श्वानों/ कबूतरों, बंदरों, कौओं, हाथियों, गाय को वीरेन अपनी टीम के साथ बेहतर भोजन खिला चुके हैं। आदर्श नगर के शमशान जहाँ कोरोना से मृत व्यक्ति का अंतिम संस्कार किया जाता है वहाँ से भी वीरेन अपनी टीम के साथ जाकर असहाय अवस्था में पड़े श्वानों के नवजात भूखे बच्चों को लाए और उन्हें नया जीवन प्रदान किया। जानवरों के लिए यह सेवा कर्म वीरेन स्वयं के खर्चे पर कर रहे हैं।

इंटरनेशनल डॉग बाजार (आईडीबी) के संस्थापक/ऑनर वीरेन शर्मा ने माही संदेश के प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन से बातचीत के दौरान बताया कि इंसानों के लिए तो सब कर रहे हैं पर इन बेजुबानों के लिए कितनों का दिल पसीजा, यही वह समय है जब हम आगे आएँ और ठान लें कि हमारे आस-पास कोई भी मासूम भूखा न सोए।

लॉकडाउन के कारण भूख से परेशान हुए बेजुबान जानवरों के लिए छब्बीस मार्च को वीरेन जयपुर पुलिस कमिश्नर आनंद श्रीवास्तव से मिले और उनसे आग्रह किया कि हम जानवरों के लिए खाना बांटना चाह रहे हैं इसके लिए पुलिस विभाग द्वारा पास बनाकर दिए जाएँ, पुलिस कमिश्नर आनंद श्रीवास्तव जो कि कोविड 19 की इस मुश्किल घड़ी में पुलिस फोर्स के साथ जयपुर शहर की जनता की सुरक्षा में जुटे हैं, इन्होंने न केवल विशेष पास बनवाए बल्कि भोजन व वाहन की भी व्यवस्था करने के लिए कहा, पुलिस कमिश्नर आनंद श्रीवास्तव ने अपनी बेटी कृतिका व जीवन संगिनी स्मिता श्रीवास्तव, (अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक) को इस नेक मुहिम का हिस्सा बनाया।

न केवल श्वान बल्कि हर जानवर से है वीरेन को प्रेम

लॉकडाउन के दौरान श्वानों के अलावा हाथी गांव जाकर हाथियों को 2000 किलो के मतीरे जब वीरेन ने जाकर खिलाए तो महज बीस मिनट में भूखे हाथियों ने अपनी भूख मिटाई तब से नियमित रूप से इन हाथियों के लिए भोजन भेजने की जिम्मेदारी भी उठा रहे हैं। जयपुर के विभिन्न क्षेत्र रामगढ़, गलता, सामोद में बंदरों और गायों के लिए भी आम, केले आदि फल व भोजन

सामग्री का वितरण कर रहे हैं।

हजारों लोग आए आगे

वीरेन ने बताया कि जब से हमने यह मुहिम आरंभ की है तब से हजारों लोग जुड़े हैं और हमें खुशी है कि जयपुर शहर के विभिन्न क्षेत्रों से लोग हमें सोशल मीडिया पर टैग कर बता रहे हैं कि आज हमने भी अपनी गली के श्वानों/जानवरों को खाना खिलाया। आज इस मुहिम ने हजारों वॉलंटियर्स खड़े किए हैं और यह संख्या प्रतिदिन बढ़ रही है।





हम सभी मिलकर संवारें जानवरों का जीवन

पिछले 22 वर्ष से इंटरनेशनल डॉग बाजार का सफलतापूर्वक संचालन कर रहे वीरेन कहते हैं कि यदि हम सब अपनी गली के श्वानों की जिम्मेदारी उठाते हैं तो यह एक बहुत बड़ा कदम होगा क्योंकि इन मासूम बच्चों को भी भूख लगती है, गला इनका भी सूखता है, दर्द इनको भी होता है तो क्या इनके लिए एक परिवार चार रोटी अतिरिक्त नहीं बना सकता। हम यकीनन कर सकते हैं और मुझे खुशी है यह मुहिम रंग ला रही है।

धानतेरस पर खरीदी भट्टियों से बेजुबानों के लिए पक रहा भोजन वीरेन ने बताया कि धनतेरस पर जहाँ लोग सोना-चांदी खरीदते हैं उस दिन हमने भट्टियाँ व बर्तन खरीदें आज वही भट्टियाँ काम आ रही हैं और इन्हीं से हजारों जानवरों के लिए भोजन तैयार किया जा रहा है।

ये 9 हीरो जो जानवरों की जान हैं... वीरेन शर्मा, गोविंद, अर्जुन, पैरी, करण, राजा, रानू, ईशा, कबीर ये महज नाम नहीं हैं ये जानवरों की जान हैं, प्रतिदिन ये हीरो सड़कों, गलियों में निकलते हैं ताकि कोई मासूम भूखा न रहे।

भविष्य में डॉग सेंचुरी बनाने की है योजना

वीरेन ने बताया कि आगामी समय में जयपुर में डॉग सेंचुरी बनाने की योजना पर काम चल रहा है और शीघ्र ही इस डॉग सेंचुरी का शुभारंभ किया जाएगा।



खुदा करे कि ये दिन बार-बार आता रहे
और अपने साथ खुशी का खज़ाना लाता रहे

H A P P Y

Birthday

जन्मदिवस 05 जुलाई



लोकप्रिय जन नेता

आदरणीय
प्रशांत बैरवा जी

विधायक निवाई-पीपलू

को जन्मदिवस
की अनगिनत
शुभकामनाएं...



शुभेच्छु : दीपेन्द्र सिंह खंगारोत पथराज



पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें
प्रेषक :

संपादक (माही संदेश)

50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरू नगर
के पास, अजमेर रोड़, हीरापुरा, जयपुर 302021
(राजस्थान) । मो. 9887409303

सेवा में,